वर्ष-2, द्वितीय अंक, जनवरी 2017 त्रै मासिक पत्रिका (जनवरी से मार्च)

मूल्यः ₹25/-

साफ बात

★ शिवपुराण के श्रवण से बिन्दुग ब्राह्मण को प्रेत योनि से मुक्ति की कथा

सैलूलर जेल, पोर्ट ब्लेयर

★ अण्डमान निकोबार की यात्रा वृतांत

★ 'नोटबंदी' भारत की आर्थिक गति में एक तीव्र झटका

(बढ़िया लोगों की घटिया सोंच)

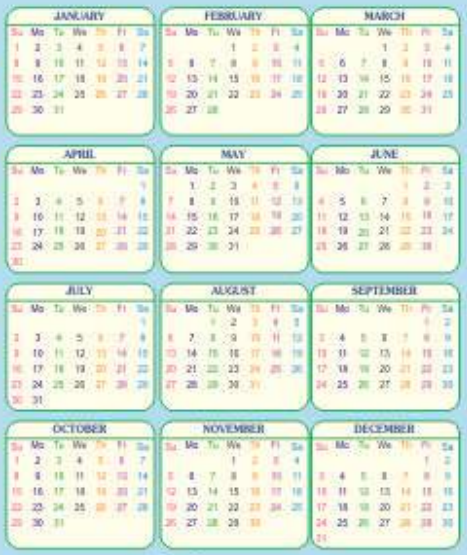

★ कैलेण्डर 2017

अमृत गोकुल चूर्ण (कालमेघ)

यह चूर्ण गैस, कब्ज, लिवर, पेट की सारी परेशानियों के लिए अचूक दवा है। महिलाओं को श्वेत प्रदर, पेशाब में जलन वगैराह में भी लाभकारी है। महानगरों में रहने वाले लोग अप्रैल से जून तक जो सेवन करते है। उन्हे डेंगू और चिकनगुनिया से बचता है। कैप्सूल का प्रयोग करने से उच्च रक्तचाप और मधुमेह के रोगियों के लिए संजीवनी बूटी का काम करता है। हजारों व्यक्ति अंग्रेजी दवा से छुटकारा पायें है।

सेवन विधि :- 2 से 3 ग्राम चूर्ण 100 ग्राम पानी में रात भर फूलना है। सुबह खाली पेट लेना है। पानी को उबालकर

पशु के लिए - रसायनिक दवा के उपयोग से दुधारू पशुओं में खास गाय एवं भैंस के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके प्रयोग के बाद इनके रख रखाव में काफी खर्च पडने से आपको लाभ कम मिलता है।

अतः आप अपने पशुओं को कम खर्च में स्वस्थ रखें जो सही समय से गर्भाधान के तथा पशुओं के पाचन संस्थान में गडबड़ी, भूख न लगना, पतला गोबर करने, अपच, पेट में दर्द, पेट में क्रीडा होना, मिट्टी खाने आदि गोबर में भूसा आना सब के लिए रामबाण दवा है।

सेवन विधि - सुबह शाम गुड, चावल का मांड या पानी के साथ 25 ग्राम।

शतावर खाओ रोग भगाओ

यह बुद्धिवर्धक अग्निवर्धक, शुक्र दुर्बलता को दूर करने वाली है। इसके सेवन से रोगनिवारक क्षमता प्राप्त होता है। शतावर की जड का चूर्ण हृदय को प्रभावित कर बल प्रदान करती है। हृदय की संकोचन क्षमता बढ़ाती है। प्रत्येक धडकन के साथ शरीर के समस्त अंगों को शुद्ध रक्त की प्राप्ति होती है। यह लिवर मजबूत बनाती है। पशुओं को भी 500 ग्राम प्रति दिन ताजा शतावर दिया जाये तो दूध की मात्रा 2 से 2.50 किलो बढ़ जायेगा तथा कभी थनैला नही होगा और समय पर गर्भाधारण योग्य बनेगी। शतावर की खेती हर पशुपालक किसान को करना चाहिए।

हमारे यहाँ औषधियों के पौधा उत्पादन एवं बिक्री की जाती है। कालमेघ, अश्वगंधा, बचा, घृतकुमारी इत्यादि के लिए भी हमसे सम्पर्क कर सकते है।

कृष्णचंद्र सिंह कुशवाहा
ग्राम पहाड़पुर,पो. महनार रोड़, (R.S.)
वैशाली मो. 9931613178

Atish Aggarwal

M. :9212750182
9212730182
9818626286

DEV POLYMERS

Deals in :- Polyster Resin, Fibre Glass, Pigment Hardner
Cobait Stoving Paints & Helmet's Accessories

माथुर मार्किट, निठारी रोड़, किराड़ी गाँव, नजदीक रामदेव बाबा की दवाई दुकान, दिल्ली-86

M. 9268017287, 9250917287

राकेश ज्वैलर्स

शुद्ध 23CT सोने व चाँदी के आभूषण खरीदें व बनवायें, हीरे के फैन्सी आभूषण आर्डर पर बनवायें।

नोट :- हर प्रकार के राशि के नग भी मिलते है।

ई-1/194, 50 फुटा रोड़, शिवराम पार्क, शनि बाजार रोड़, नांगलोई,दिल्ली-41

MAHIR ENTERPRISES

(An ISO : 9001 : 2008)

Deals in :- All Kinds of Container & Mobile Toilet Van

153, Sultanpur Ext., MG Road, New Delhi - 110030

Ph.: 9810947700, 9717444009

Email: business@mahirenterprises.com, gourav@mahirenterprises.com

Website: www.mahirenterprises.com

CATS Pvt. Ltd.

Complete and Top Service Pvt. Ltd.

Email :- chespvtltd@gmail.com M. 9717569066, 9250450626

2 Tyre mounted
10 Seater Mobile Toilet Van
with Upper Tank

Single Seater Porta Cabin having
the Capacity 300 Ltr.Water tank
& sludge storage tank with commode
in Western Style

4 Tyre mounted
10 Seater Mobile Toilet Van
with lower Tank

2 Tyre mounted
6 Seater Mobile Toilet Van
with Upper Tank

Single Seater Porta Cabin having
the Capacity 300 ltr. sludge
storage tank with commode
in Western Style

2 Tyre mounted
4 Seater Mobile Toilet Van
with upper Tank

2 Tyre mounted
6 Seater Mobile Toilet Van
with lower Tank

4 Tyre mounted with
lower Tank 10 Seater

2 Tyre mounted with
upper Tank 10 Seater

मूल्य – 20/–

साफ बात

प्रकाशकः – रोहिताश सिंह
71, शिवराम पार्क,
नांगलोई, दिल्ली–41

मुद्रक : – राधे कृष्णा इन्टरप्राईजेज
डी–88, अमर कालोनी
नांगलोई, दिल्ली–41

सम्पादक मण्डल

रोहिताश सिंह		प्रधान सम्पादक
मिथिलेश कुमार सिंह (साथी)		सम्पादक
जितेन्द्र प्रसाद चौधरी		राजनीतिक सम्पादक
चन्द्रमोहन सिंह (अधिवक्ता)		कानूनी सलाहकार
सरोज कुमार सिंह (अधिवक्ता)		ब्यूरो चीफ
जितेन्द्र साह		ब्यूरो चीफ
संत लाल राय		ब्यूरो चीफ
रंजीत झा		ब्यूरो चीफ
दिलीप कुमार सिंह		ब्यूरो चीफ

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
1	शिव पुराण के श्रवण से बिन्दुग ब्राह्मण का प्रेत योनि से मुक्ति	साथी (शिवपुराण से)	3–6
2	'नोटबंदी' भारत की आर्थिक गति में एक तीव्र झटका	साथी	7–8
3	ये पब्लिक है, सब जानती है।	रोहिताश सिंह	9–10
4	बल, ज्ञान और धन का सदुपयोग करें।	जितेन्द्र कुमार चौधरी	10
5	भारतीय सिने पटल पर उभरता सितारा 'कुमार वैभव'	रोहिताश सिंह	11
6	उतराखण्ड की पावन भूमि पर अद्‌भुत अलौकिक तीर्थ जागेश्वर धाम	रोहिताश सिह	11–12
7	अण्डमान निकोबार की यात्रा वृतांत	रोहिताश सिंह	13–14
8	हम पंछी बन जाऐं व सपनों का भारत	धर्मवती देवी	14
9	मानवता	साथी	16

श्री शिवपुराण (धारावाहिक)

शौनकजी के साधनविषयक प्रन्न करने पर सूतजी उन्हे शिवपुराण की उत्कृष्ठ महिमा बताते है।

श्री शौनकजीने पूछा–महाज्ञानी सूतजी! आप सम्पूर्ण सिद्धान्तों के ज्ञाता हैं। प्रभो! मुझसे पुराणों की कथाओं के सारतत्वका विशेषरूप से वर्णन कीजिये। ज्ञान और वैराग्य सहित भक्ति से प्राप्त होनेवाले विवेककी वृद्धि कैसे होती है? तथा साधुपुरूष किस प्रकार अपने काम क्रोध आदि मानसिक विकारोंका निवारण करते हैं? इस घोर कलिकाल में जीव प्रायः आसुर स्वभाव के हो गये है, उस जीवसमुदाय को शुद्ध (दैवी सम्पत्ति से युक्त) बनाने के लिए सर्वश्रेष्ठ उपाय क्या है? आप इस समय मुझे ऐसा कोई शाश्वत साधन बताइये, जो कल्याणकारी वस्तुओं में भी सबसे उत्कृष्ठ एवं परम मंगलकारी हो तथा पवित्र करनेवाले उपायों में भी सर्वोत्तम पवित्रकारक उपाय हो। तात! वह साधन ऐसा हो, जिसके अनुष्ठान से शीघ्र ही अन्तः करणकी विशेष शुद्धि हो जाय तथा उससे निम्रल चित्तवाले पुरूष को सदा के लिए शिव की प्राप्ति की जाय।

श्री सूत जी ने कहा – मुनिश्रेष्ठ शौनक ! तुम धन्य हो; क्योकि तुम्हारे हृदय में पुराण–कथा सुनने का विशेष प्रेम एवं लालसा है। इसलिए मैं शुद्ध बुद्धि से विचारकर तुमसे परम उत्तम शास्त्र का वर्णन करता हूँ। वत्स! वह सम्पूर्ण शास्त्रों के सिद्धान्त से सम्पन्न, भक्ति आदि को बढानेवाला तथा भगवान शिव को संतुष्ट करने वाला है। कानों के लिए रसायन अमृतस्वरूप तथा दिव्य है, तुम उसे श्रवण करों। मुने! वह परम उत्तम शास्त्र है–शिवपुराण, जिसका पूर्वकाल में भगवान शिवने ही प्रवचन किया था। यह कालरूपी सर्प से प्राप्त होनेवाले महान त्रासका विनाश करने वाला उत्तम साधन है। गुरूदेव व्यासने सनत्कुमार मुनिकाउपदेश पाकर बडे आदर से संक्षेपमें ही इस पुराना का प्रतिपादन किया है। इस पुराण के प्रणयनका उद्देश्य है– कलियुग में उत्पन्न होनेवाले मनुष्यों के परम हित का साधन।

यह शिवपुराण परम उत्तम शास्त्र है। इसे इस भूतलपर भगवान शिव का वाङ्गमय स्वरूप समझना चाहिये औरसब प्रकार से इसका सेवन करना चाहिये। इसका पठन और श्रवण सर्वसाधनरूप है। इससे शिव भक्ति पाकर श्रेष्ठतम स्थिति में पहुँचा हुआ मनुष्य शीघ्र ही शिवपद को प्राप्त कर लेता है। इसीलिए सम्पूर्ण यत्न करके मनुष्यों ने इस पुराण को पढ़ने की इच्छा की है– अथवा इसके अध्ययन को अभीष्ट साधन माना है। इसी तरह इसका प्रेमपूर्वक श्रवण भी सम्पूर्ण मनोवांछित फलों को देने वाला है। भगवान शिव के इस पुराण को सुनने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है। तथा इस जीवन में बड़े – बड़े उत्कृष्ट भोगों का उपभोग करके अन्त में शिवलोक को प्राप्त कर लेता है।

यह शिवपुराण नामक ग्रन्थ चौबीस हजार श्लोकों से युक्त है। इसकी सात संहिताएँ है। मुनष्य को चाहियें कि वह भक्ति, ज्ञान और वैराग्य से सम्पन्न हो बड़े आदर से इसका श्रवण करें। सात संहिताओं से युक्त यह दिव्य शिवपुराण परब्रह्म परमात्मा के समान विराजमान है। और सबसे उत्कृष्ट गति प्रदान करनेवाला है।

जो निरन्त अनुसंधानपूर्वक इस शिवपुराण को बाँचता है। अथवा नित्य प्रेमपूर्वक इसका पाठमात्र करता है, वह पुण्यात्मा है– इसमें संशय नही हैं जो उत्तम बुद्धि वाला पुरूष अन्तकाल में भक्तिपूर्वक इस पुराण को सुनता है, उस पर अत्यन्त प्रसन्न हुए भगवान महेश्वर उसे अपना पद (धाम) प्रदान करते है। जो प्रतिदिन आदरपूर्वक इस शिवपुराण का पूजन करता है। वह इस संसार में सम्पूर्ण भोगों को भोगकर अन्त में भगवान शिव के पदको प्राप्त कर लेता है। जो प्रतिदन आलस्यरहित हो रेशमी वस्त्र आदि के वेष्टनसे इस शिवपुराण का सत्कार करता है, वह सदा सुखी होता है। यह शिवपुराण निर्मल तथा भगवान शिव का सर्वस्व है; जो इहलोक और परलोक में भी सुख चाहता है, उसे आदर के साथ प्रयन्तपूर्वक इसका सेवन करना चाहिये। यह निर्मल एवं उत्तम शिवपुराण धर्म, अर्थ काम और मोक्षरूप चारों पुरूषार्थो को देनेवाला है। अतः सदा प्रेमपूर्वक इसका श्रवण एवं विशेष पाठ करना चाहिये।

शिवपुराण के श्रवण से देवराज को शिवलोक की प्राप्ति तथा चञ्चुला का पाप से भय एवं संसार से वैराग्य

श्री शौनकजी ने कहा–महाभाग सूत जी! आप धन्य हैं, परमार्थ तत्व के ज्ञाता है, आपने कृपा करके हमलोगों को यह बात बड़ी अद्भूत एवं दिव्य कथा सुनायी है। भूतलपर इस कथा के समान कल्याणका सर्वश्रेष्ठ साधन दूसरा कोई नही हैं, यह बात हमने आज आपकी कृपा से निश्चय पूर्वक समझ ली। सूत जी! कलियुग में इस कथा में कौन – कौन से पापी शुद्ध होते हैं? उन्हे कृपापूर्वक बताइये और इस जगत को कृतार्थ कीजिए।

सूत जी बोले– मुने! जो मनुष्य पापी, दुराचारी, खल तथा काम क्रोध आदि में निरन्तर डूबे रहने वाले हैं, वे भी इस पुराण के श्रवण–पठन से अवश्य ही शुद्ध हो जाते है। इसी विषय में जानकार मुनि इस प्राचीन इतिहास का उदाहरण दिया करते है, जिसके श्रवणमात्र से पापों का पूर्णतया नाश हो जाता है।

पहले की बात है, कहीं किरातों के नगर में एक ब्राह्मण रहता था, जो ज्ञान में अत्यन्त दुर्बल, दरिद्र, रस बेचनेवाला तथा वैदिक धर्म से विमुख था। वह स्नान–संध्या आदि कर्मो से भ्रष्ट हो गया था। और वैश्यवृत्ति में तत्पर रहता था। उसका नाम था देवराज। वह अपने ऊपर विश्वास करने वाले लोगों को ठगा करता था। उसने ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों, शुद्रो तथा दूसरों को भी अनेक बहानों से मारकर उन–उनका धन हड़प लिया थां परन्तु उस पापी का थोड़ा–सा भी धन कभी धर्म के काम में नही लगा था। वह वेश्यागामी तथा सब प्रकार से आचार भ्रष्ट था।

एक दिन घूमता–घामता वह दैवयोग से प्रतिष्ठानपुर (झूसी–प्रयाग) में जा पहुँचा। वहाँ उसने एक शिवालय देखा, जहाँ बहुत से साधु–महात्मा एकत्र हुए थे। देवराज उस शिवालय में ठहर गया, किंतु वहाँ उस ब्राह्मण को ज्वर आ गया। उस ज्वर से उसका बड़ी पीड़ा होने लगी। वहाँ एक ब्राह्मणदेवता शिवपुराण की कथा सुना रहे थे। ज्वर में पड़ा हुआ देवराज ब्राह्मण के मुखारविन्द से निकली हुई उस शिव कथा को निरन्तर सुनता रहा। एक मास के बाद वह ज्वर से अत्यन्त पीड़ित होकर चल बसा। यमराज के दूत आये और उसे पाशों से बांधकर बलपूर्वक यमपूरी में ले गये। इतने में ही शिवलोक से भगवान शिव के पार्षदगण आ गये। उनके गौर अंग कर्पूरके समान उज्जवल थे, हाथ त्रिशूल से सुशोभित हो रहे थे, उनके सम्पूर्ण अंग भस्म से उद्धासित थे और रूद्राक्षकी मालाएँ उनके शरीर की शोभा बढ़ा रही थीं। वे सब–के–सब क्रोधपूर्वक यमपुरी में गये और यमराज के दूतों को मार–पीटकर बारंबार धमकाकर उन्होंने देवराज को उनके चंगुल से छुडा लिया और अत्यन्त अद्भुत विमानपर बिठाकर जब वे शिवदूत कैलाश जाने का उद्यत हुए, उस समय यमपुरी में बडा भारी कोलाहल मच गया। उस कोलाहल को सुनकर धर्मराज

अपने भवन से बाहर आये। साक्षात् दूसरे रूदों के समान प्रतीत होने वाले उन चारों दूतों को देखकर धर्मज्ञ धर्मराज ने उनका विधि पूर्वक पूजन किया और ज्ञान दृष्टि से देखकर सारा वृत्तांत जान लिया। उन्होंने भय के कारण भगवान शिव के उन महात्मा दूतों से कोई बात नहीं पूछी, उलटे उन सबकी पूजा एवं प्रार्थना की। तत्पश्चात् वे शिवदूत कैलाश को चले गये और वहाँ पहुँचकर उन्होंने उस ब्राह्मण को दयासागर साम्ब शिवके हाथों में दे दिया।

शौनक जी ने कहा– महाभागसूत जी! आप सर्वज्ञ हैं। महामते! आपके कृपा प्रसादसे मैं बारंबार कृतार्थ हुआ। इस इतिहास को सुनकर मेरा मन अत्यन्त आनंद में निमग्न हो रहा है। अत: अब भगवान शिवमें प्रेम बढ़ाने वाली शिव सम्बंधनी दूसरी कथाको भी कहिए।

श्री सूत जी बोले–शौनक! सुनो, मैं तुम्हारे सामने गोपनीय कथावस्तु का भी वर्णन करूंगा; क्योंकि तुम शिव–भक्तों में अग्रगण्य तथा वेद वक्ताओं में श्रेष्ठ हो। समुद्र के निकटवर्ती प्रदेश में एक वाष्कल नामक ग्राम है, जहाँ वैदिक धर्मसे विमुख महापापी द्विज निवास करते हैं। वे सब–के–सब बड़े दुष्ट हैं, उनका मन दूषित विषय भोगों में ही लगा रहा है। वे न देवताओं पर विश्वास करते है न भाग्यपर; वे सभी कुटिल वृत्तिवाले हैं। किसानी करते और भाँति–भाँति के घातक अस्त्र–शस्त्र रखते हैं। वे व्यभिचारी और खल हैं। ज्ञान, वैराग्य तथा सद्धर्म का सेवन ही मनुष्य के लिये परम पुरूषार्थ है– इस बात को वे बिलकुल नहीं जानते हैं। वे सभी पशुबुद्धि वाले हैं (जहाँ के द्विज ऐसे हो, वहाँ के अन्य वर्णों के विषय में क्या कहा जाय।) अन्य वर्णों के लोग भी उन्हीं की भाँति कुत्सित विचार रखनेवाले, स्वधर्मविमुख एवं खल हैं; वे सदा कुकर्म में लगे रहते ओर नित्य विषय भोगों में ही डूबे रहते हैं। वहाँ की सब स्त्रियाँ भी कुटिल स्वभाव की, स्वेच्छाचारिणी, पापा सक्त, कुत्सित विचारवाली और व्यभिचारिणी हैं। वे सद्व्यवहार तथा सदाचार से सर्वथा शून्य हैं। इस प्रकार वहाँ दुष्टों का ही निवास है।

इस तरह दुराचार में डूबे हुए उन मूढ़ चित्तवाले पति–पत्नी का बहुत सा समय व्यर्थ बीत गया। तदनन्तर शुद्रजातीय वेश्या का पति बना हुआ वह दूषित बुद्धि वाला दुष्ट ब्राह्मण बिन्दुग समयानुसार मृत्यु को प्राप्त हो नरक में जा पड़ा। बहुत दिनों तक नरक के दु:ख भोगकर वह मूढ़ बुद्धि पापी विन्ध्यपर्वत पर भयंकर पिशाच हुआ। इधर, उस दुराचारी पति बिन्दुग के मर जाने पर वह मूढ़ हृदया चंचुला बहुत समय तक पुत्रों के साथ अपने घर में ही रही।

एक दिन दैवयोग से किसी पुण्य पर्व के आने पर वह स्त्री भाई–बन्धुओं के साथ गोकर्ण–क्षेत्र में गयी। तीर्थयात्रियों के संग से उसने भी उस समय जाकर किसी तीर्थ के जल में स्नान किया। फिर वह साधारणतया (मेला देखने की दृष्टि से) बन्धुजनों के साथ यत्र–तत्र घूमने लगी। घूमती–घामती किसी देवमन्दिर में गयी और वहाँ उसने एक दैवज्ञ ब्राह्मण के मुख से भगवान शिव की परम पवित्र एवं मंगलकारिणी उत्तम पौराणिक कथा सुनी। कथावाचक ब्राह्मण कह रहे थे कि 'जो स्त्रियाँ परपुरूषों के साथ व्यभिचार करती हैं, वे मरने के बाद जब यमलोक में जाती हैं, तब यमराज के दूत उनकी योनि में तपे हुए लोहे का परिघ डालते है। 'पौराणिक ब्राह्मण के मुख से यह वैराग्य बढ़ाने वाली कथा सुनकर चंचुला भय से व्याकुल हो वहाँ काँपने लगी। जब कथा समाप्त हुई और सुनने वाले सब लोग वहाँ से बाहर चले गये, तब वह भयभीत नारी एकान्त में शिवपुराणकी कथा बाँचनेवाले उन ब्राह्मण देवता से बोली।

चंचुला ने कहा– ब्रह्मन्! मैं अपने धर्म को नहीं जानती थी। इसलिये मेरे द्वारा बड़ा दुराचार हुआ है। स्वामिन्! मेरे ऊपर अनुपम कृपा करके आप मेरा उद्धार कीजिये। आज आपके वैराग्य–रस से ओत प्रोत इस प्रवचन को सुनकर मुझे बड़ा भय लग रहा है। मैं काँप उठी हूँ और मुझे इस संसार से वैरागय हो गया है। मुझ मूढ़ चित्तवाली पापिनी को धिक्कार है। मैं सर्वथा निन्दा के योग्य हूँ। कुत्सित विषयों में फँसी हुई हूँ और अपने धर्म से विमुख हो गयी हूँ। हाय! न जाने किस–किस घोर कष्टादायक दुर्गति में मुझे पड़ना पडेगा और वहाँ कौन बुद्धिमान पुरूष कुमार्ग में मन लगाने वाली मुझ पापिनी का साथ देगा। मृत्युकाल में उन भयंकर यमदूतों को मैं कैसे देखूँगी? जब वे बलपूर्वक मेरे गले में फंदे डालकर मुझे बाँधेंगे, तब मैं कैसे धीरज धारण कर सकूँगी। नरकमें जब मेरे शरीर के टुकड़े टुकडे किये जायेंगे, उस समय विशेष दुख देने वाली उस महायातना को मैं वहाँ कैसे सहूँगी? हाय! मैं मारी गयी! मैं जल गयी! मेरा हृदय विदीर्ण हो गया और मैं सब प्रकार से नष्ट हो गयी; क्योकि मैं हर तरह से पाप में ही डूबी रही हूँ। ब्रह्मन! आप ही मेरे गुरू, आप ही माता और आप ही पिता है। आपकी शरण में आयी हुई मुझ दीन अबला का आप ही उद्धार कीजिये, उद्धार कीजिये।

सूतजी कहते हैं–शौनक! इस प्रकार खेद और वैरागय से युक्त हुईचंचुला ब्राह्मण देवता के दोनों चरणों में गिर पड़ी। तब उन बुद्धिमान ब्राह्मण ने कृपापूर्वक उसे उठाया और इस प्रकार कहा।।

चञ्चुला की प्रार्थना से ब्राह्मण का उसे पूरा शिवपुराना सुनाना और समयानुसार शरीर छोड़कर शिवलोक में जा चञ्चुला का पार्वती जी की सखी एवं सुखी होना।

ब्राह्मण बोले – नारी! सौभाग्यकी बात है कि भगवान शंकर की कृपा से शिवपुराण की इस वैराग्ययुक्त कथा को सुनकर तुम्हे समयपर चेत हो गया है। ब्राह्मणपत्नी! तुम डरो मत। भगवान शिवकी शरण में जाओ। शिव की कृपा से सारा पाप तत्काल नष्ट हो जाता है। मैं तुमसे भगवान शिवकी कीर्तिकथासे युक्त उस परम वस्तु को वर्णन करूंगा, जिससे तुम्हे सदा सुख देने वाली उत्तम गति प्राप्त होगी। शिव की उत्तम कथा सुनने से ही तुम्हारी बुद्धि इस तरह पश्चाताप से युक्त एवं शुद्ध हो गयी है। साथ ही तुम्हारे मनमें विषयों के प्रति वैराग्य हो गया है। पश्चाताप ही पाप करने वाले पापियों के लिए सबसे बड़ा प्रायश्चित है। सत्पुरूषों ने सबके लिए पश्चाताप को ही समस्त पापों को शोधक बताया है, पश्चाताप से ही पापों की शुद्धि होती है। जो पश्चाताप करता है, वही वास्तव में पापों का प्रायश्चित करता है; क्योकि सत्पुरूषों ने समस्त पापों की शुद्धि के लिए जैसे प्रायश्चित का उपदेश किया है, वह सब पश्चाताप से सम्पन्न हो जाता है। जो पुरूष विधिपूर्वक प्रायश्चित करके निर्भय हो जाता है, पर अपने कुकर्म के लिए पश्चाताप नहीं करता, उसे प्राय: उत्तम गति नहीं प्राप्त होती। परन्तु जिसे अपने कुकृत्यपर हार्दिक पश्चाताप होता है, वह अवश्य उत्तम गति का भागी होता है।, इसमें संशय नहीं। इस शिवपूरण की कथा सुनने से जैसे चित्त शुद्धि होती है, वैसी दूसरे उपायों से नहीं होती। जैसे दर्पण साफ करने पर निर्मल हो जाता है, उसी प्रकार इस शिवपुराण की कथा से चित्त अत्यंत शुद्ध हो जाता है– इसमें संशय नहीं है। मनुष्यों के शुद्ध चित्त में जगदम्बा पार्वती सहित भगवान शिव विराजमान रहते हैं। इससे वह विशुद्धात्मा पुरूष श्रीसाम्ब सदा शिवके पद को प्राप्त होता है। इस उत्तम कथा का श्रवण समस्त मनुष्यों के लिए कल्याण का बीज है। अत: यथोचित (शास्त्रोक्त) मार्ग से इसकी आराधना अथवा सेवा करनी चाहिए। यह भवबन्धनरूपी रोग का नाश करनेवाली है। भगवान शिव की कथा कोसुनकर फिर अपने हृदय में उसका मनन एवं निदिध्यासन करना चाहिये। इससे पूर्णतया चित्त की शुद्धि हो जाती है। चित्त शुद्धि होने से महेश्वर की भक्ति अपने दोनों पुत्रों (ज्ञान और वैराग्य) के साथ निश्चय ही प्रकट होती है। तत्पश्चात् महेश्वर के अनुग्रह से दिव्य मुक्ति प्राप्त होती है, इसमें संशय नहीं है। जो मुक्ति से वंचित है। उसे पशु समझना चाहिये; क्योकि उसका चित्त माया के बंधन में आसक्त है। वह निश्चय ही संसार बंधन से मुक्त नहीं हो

पाता।

ब्राह्मण पत्नी! इसलिए तुम विषयों से मनको हटा लो और भक्ति भाव से भगवान शंकर की इस परम पावन कथा को सुनो– परमात्मा शंकर की इस कथा को सुनने से तुम्हारे चित्त की शुद्धि होगी और इससे तुम्हे मोक्ष की प्राप्ति जो जायगी। जो निर्मल चित्त से भगवान शिवके चरणाविन्दों का चिन्तन करता है, उसकी एक ही जन्म में मुक्ति हो जाती है–यह मैं तुमसे सत्य–सत्य कहता हूँ।

सूत जी कहते हैं– शौनक! इतना कहकर वे श्रेष्ठ शिवभक्त ब्राह्मणचुप हो गये। उनका हृदय करूणा से आर्द्र हो गया था। वे शुद्धचित्त महात्मा भगवान शिव के ध्यान में मग्न हो गये। तदनन्तर बिन्दुग की पत्नी चंचुला मन–ही–मन प्रसन्न हो उठी। ब्राह्मण का उक्त उपदेश सुनकर उसके नेत्रों में आनंद के आँसू छलक आये थे। वह ब्राह्मणपत्नी चंचुला हर्ष भरे हृदय से उन श्रेष्ठ ब्राह्मण के दोनों चरणों में गिर पड़ी और हाथ जोड़कर बोली– ' मैं कृतार्थ हो गयी।' तत्पश्चात् उठकर वैराग्ययुक्त उत्तम बुद्धिवाली वह स्त्री, जो अपने पापों के कारण आतंकित थी।, उन महान शिव भक्त ब्राह्मण से हाथ जोड़कर गद वाणी में बोली।

चंचुला ने कहा– ब्रह्मन्! शिवभक्तों में श्रेष्ठ! स्वामिन! आप धन्य हैं, परमार्थदर्शी हैं और सदा परोपकार में लगे रहते है। इसलिए श्रेष्ठ साधु पुरूषों में प्रशंसा के योग्य हैं। साधो। मैं नरक के समुद्र में गिर रही हूँ। आप मेरा उद्धार कीजिए, उद्धार कीजिए। पौराणिक अर्थतत्व से सम्पन्न जिस सुन्दर शिवपुराण की कथा को सुनकर मेरे मन में सम्पूर्ण विषयों से वैराग्य उत्पन्न हो गया, उसी इस शिवपुराण को सुनने के लिए इस समय मेरे मन में बड़ी श्रद्धा हो रही है।

सूत जी कहते हैं– ऐसा कहकर हाथ जोड़उनका अनुग्रह पाकर चंचुला उस शिवपुराण की कथा को सुनने की इच्छा मन में लिये उन ब्राह्मण देवता की सेवा में तत्पर हो वहाँ रहने लगी। तदनन्तर शिव भक्तों में श्रेष्ठ और शुद्ध बुद्धि वाले उन ब्राह्मण देव ने उसी स्थान पर उस स्त्री को शिवपुराण की उत्तम कथा सुनायी। इस प्रकार उस गोकर्ण नाम महाक्षेत्र में उन्हीं श्रेष्ठ ब्राह्मण से उसने शिवपुराण की वह परम उत्तम कथा सुनी, जो भक्ति, ज्ञान और वैराग्य को बढ़ाने वाली तथा मुक्ति देने वाली है। उस परम उत्तम कथा को सुनकर वह ब्राह्मणपत्नी अत्यन्त कृतार्थ हो गयी। उसक चित्त शीघ्र ही शुद्ध हो गया। फिर भगवान शिव के अनुग्रह से उसके हृदय में शिव केसगुणरूप का चिन्तन होने लगा। इस प्रकार उसने भगवान शिव में लगी रहने वाली उत्तम बुद्धि पाकर शिव के सच्चिदानंद स्वरूप का बारंबार चिन्तन आरम्भ किया। तत्पश्चात् समय के पूरे होने पर भक्ति, ज्ञान और वैरागय से युक्त हुईचंचुलाने अपने शरीर को बिना किसी कष्ट के त्याग दिया। इतने में त्रिपुरशत्रु भगवान शिव का भेजा हुआ एक दिव्य विमान द्रुत गति से वहाँ पहुँचा, जो उनके अपने गणों से संयुक्त और भाँति भाँति के शोभा साधनों से सम्पन्न था। चंचुला उस विमान पर आरूढ़ हुई और भगवान शिव के श्रेष्ठ पार्षदों ने उसे तत्काल शिवपुरी में पहुँचा दिया। उसके सारे मल धुल गये थे। वह दिव्यरूपधारिणी दिव्यांगना हो गयी थी। उसे दिव्य अवयव उसकी शोभा बढ़ाते थे। मस्तक पर अर्धचन्द्रका मुकुट धारण किये वह गौरांगी देवी शोभाशाली दिव्य आभूषणों से विभूषित थी। शिवपुरी में पहुँचकर उसे सनातन देवता त्रिनेत्रधारी महादेव जी को देखा। सभी मुख्य–मुख्य देवता उनकी सेवा में खड़े थे। गणेश, भृंगी, नंदीश्वर तथा वीरभद्रेश्वर आदि उनकी सेवा में उत्तम भक्तिभाव से उपस्थित थे। उनकी अंगकान्ति करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाशित हो रही थी। कण्ठ में नील चिन्ह शोभा पाता था। पाँच मुख और प्रत्येक मुख में तीन तीन नेत्र थे। मस्तकपर अर्द्धचन्द्राकार मुकुट शोभा देता था। उन्होने अपने वामांग भाग में गौरी देवी को बिठा रखा था, जो विद्युत–पुत्र के समान प्रकाशित थीं। गौरापति महादेवजी की कान्ति कपूर के समान गौर थी। उनका सारा शरीर श्वेत भस्मसे भासित था। शरीर पर श्वेत वस्त्र शोभा पा रहे थे। इस प्रकार परम उज्जवल भगवान शंकर का दर्शन करके वह ब्राह्मणपत्नी चंचुला बहुत प्रसन्न हुई। अत्यंत प्रीतियुक्त होकर उसने बड़ी उतावली के साथ भगवान को बारंबार प्रणाम किया। फिर हाथ जोड़कर वह बड़े प्रेम, आनंद और संतोष युक्त हो विनीत भाव से खड़ी हो गयी। उसके नेत्रों से आनंदाश्रुओं की अविरल धारा बहने लगी तथा सम्पूर्ण शरीर में रोमांच हो गया। उस समय भगवती पार्वती और भगवान शंकर ने उसे बडी करूणा के साथ अपने पास बुलाया और सौम्य दृष्टि सेउसकी ओर देखा। पार्वती जी ने तो दिव्यरूपधारिणी बिन्दुगप्रिया चंचुला को प्रेम पूर्वक अपनी सखि बना लिया। वह उस परमानंदघन ज्योतिः स्वरूप सनातन धाम में अविचल निवास पाकर दिव्य सौख्य से सम्पन्न हो अक्षय सुख का अनुभव करने लगी।

चञ्चुला के प्रयत्न से पार्वती जी की आज्ञा पाकर तुम्बुरूका विन्ध्यपर्वतपर शिवपुराण की कथा सुनाकर बिन्दुग का पिशाचयोनि से उद्धार करना तथा उन दोनों दम्पति का शिवधाम में सुखी होना।

सूत जी बोले– शौनक! एक दिन परमानन्द में निमग्न हुई चंचुलाने उमा देवी के पास जाकर प्रणाम किया और दोनों हाथ जोड़कर वह उनकी स्तुति करने लगी।

चंचुला बोली गिरिराजनन्दिनी स्कन्दमाता उमे! मनुष्यों ने सदा आपका सेवन किया है समस्त सुखों को देने वाली शुम्भुप्रिये! आपके ब्रह्मस्वरूपिणी हैं। विष्णु और ब्रह्म आदि देवताओं द्वारा सेव्य हैं। आप ही सगुणा और निर्गुणा है तथा आप ही सूक्ष्मा सच्चिदानंद स्वरूपिणी आद्या प्रकृति है। आप ही संसार की सृष्टि, पालन और संहार करने वाली हैं। तीनों गुणों का आश्रय भी आप ही हैं। ब्रह्म, विष्णु और महेश्वर–इन तीनों देवताओं का आवास स्थान तथा अनकी उत्तम प्रतिष्ठा करने वाली पराशक्ति आप ही हैं।

सूतजी कहते हैं– शौनक ! जिसे सद्गति प्राप्त हो चुकी थी, वह चंचुला इस प्रकार मेहश्वर पत्नी उमाकी स्तुति करके सिर झुकाये चुप हो गयी। उसके नेत्रों में प्रेम के आँसू उमड़ आये थे। तब करूणासे भरी हुई शंकरप्रिया भक्तवत्सला पार्वती देवी चंचुला को सम्बोधित करके बड़ेप्रेम से इस प्रकार कहा।

पार्वती बोली– सखी चंचुले! सुन्दरि! मै तुम्हारी की हुई इस स्तुति से बहुत प्रसन्न हूँ। बोलो, क्या वर माँगती हो? तुम्हारे लिए मुझे कुछ भी अदेय नहीं हैं।

चंचुला बोली–निष्पाप गिरिराज कुमारी! मेरे पति बिन्दुग इस समय कहाँ हैं, उनकी कैसी गति हुई है– यह मैं नही जानती! कल्याणमयी दीनवत्सले! मैं अपने उन पति देव से किस प्रकार संयुक्त हो सकूँ, वैसा ही उपाय कीजिए। महेश्वरि! महादेवि! मेरे पति एक शूद्र जातीय वेश्या के प्रति आसक्त थे और पाप में ही डूबे रहते थे। उनकी मृत्यु मुझसे पहले ही हो गयी थी। न जाने वे किस गति को प्राप्त हुए।

गिरिजा बोली–बेटी! तुम्हारा बिन्दुग नामवाला पति बड़ा पापी था। उसका अन्तःकरण बडा ही दूषित था। वेश्या का उपभोग करने वाला यह महामूढ मरने के बाद नरक में पडा अगणित वर्षो तक नरक में नाना प्रकार के दुख भोगकर व पापात्मा अपने शेष पाप को भोगने के लिय विन्ध्यपर्वतपर पिशाच हुआ है। इस समय वह पिशाच अवस्था में ही है। और नाना प्रकार के

कलेश उठा रहा है। वह दुष्ट वहीं वायु पीकर रहता है। और सदा सब प्रकार के कष्ट सहता है।

सूतजी कहते है–शौनक! गौरी देवी की यह बात सुनकर उत्तम व्रतका पालन करने वाली चंचुला उस समय पति के महान दु:ख से दु:खी हो गयी। फिर उनको स्थिर करके उस ब्राह्मणपत्नी ने व्यथित हृदय से महेश्वरी को प्रणाम करके पुन: पूछा।

चंचुला बोली– महेश्वरी! महादेवि! मुझ पर कृपा कीजिए और दूषित कर्म करने वाले मेरे उस दुष्ट पति का अब उद्धार कर दीजिए। देवि! कुत्सित बुद्धिवाले मेरे उस पापात्मा पति को किस उपाय से उत्तम गति प्राप्त होसकती हैं, शीघ्र बताइए। आपको नमस्कार है।

पार्वती ने कहा – तुम्हारा पति यदि शिव पुराण की पुण्यमयी उत्तम कथा सुने तो सारी दुर्गति को पार करके वह उत्तम गति का भागी हो सकता है। अमृत के समान मधुर अक्षरों से युक्त गौरी देवी का यह वचन आदरपूर्वक सुनकर चंचुलाने हाथ जोड़ मस्तक झुकाकर उन्हे बारंबार प्रणाम किया और अपने पति के समस्त पापों की शुद्धि तथा उत्तम गति की प्राप्ति के लिये पार्वती देवी से यह प्रार्थना कि 'मेरे पति को शिवपुराण सुनाने की व्यवस्था होनी चाहिए, उस ब्राह्मणपत्नी के बांरबार प्रार्थना करने पर शिवप्रिया गौरी देवी को बड़ी दया आयी। उन भक्त वत्सला महेश्वरी गिरिराजकुमारी ने भगवान शिव की उत्तम कीर्ति का गान करने वाले गन्धर्वराज तुम्बुरूको बुलाकर उनसे प्रसन्नतापूर्वक इस प्रकार कहा–तुम्बरु! तुम्हारी भगवान शिव में प्रीति है। तुम मेरे मन की बातों को जानकर मेरे अभीष्ट कार्यो को सिद्ध करने वाले हो। इसलिए मैं तुमसे एक बात कहती हूँ। तुम्हारा कल्याण हो। तुम मेरी इस सखी के साथ शीघ्र ही विन्ध्यपर्वत पर जाओ। वहाँ एक महाघोर और भयंकर पिशाच रहता है। उसका वृतान्त तुम आरम्भ से ही सुनो। मैं तुमसे प्रसन्नतापूर्वक सब कुछ बताती हूँ। पूर्व जन्म में वह पिशाच बिन्दुग नामक ब्राह्मण था। मेरी इस सखी चंचुला का पति था। परन्तु वह दुष्ट वेश्यागामी हो गया। स्नान संध्या आदि नित्यकर्म छोड़कर अपवित्र रहने लगा। क्रोध के कारण उसकी बुद्धिपर मूढ़ता छा गयी थी। वह कर्तव्याकर्तव्य का विवेक नहीं पर पाता था। अभक्ष्यभक्षण, सज्जनों से द्वेष और दूषित वस्तुओं का दान लेना यही उसका स्वाभाविक कर्म बन गया था। वह अस्त्र शस्त्र लेकर हिंसा करता, बाये हाथ से खाता, दीनों को सताता और क्रूरतापर्वूक पराये घरों में आग लगा देता था। चाण्डालों से प्रेम करता और प्रतिदिन वेश्या के सम्पर्क में रहता था। बडा दुष्ट था। वह पापी अपनी पत्नी का परित्याग करके दुष्टों के संग में आनंद मानता था। वह मृत्युपर्यन्त दुराचार में ही फँसा रहा। फिर अन्तकाल आने पर उसकी मृत्यु हो गयी। वह पापियों के भोगस्थान घोर यमपुर में गया और वहाँ बहुत से नरकों का उपभोग करके वह दुष्टात्मा जीव इस समय विन्ध्यपर्वत पर पिशाच बना हुआ है। वही वह दुष्ट पिशाच अपने पापों का फल भोग रहा है। तुम उसके आगे यत्नपूर्वक शिवपुराण की उस दिव्य कथा का प्रवचन करो, जो परम पुण्यमयी तथा समस्त पापों का नाश करने वाली है। शिवपुराण की कथा का श्रवण सबसे उत्कृष्ट पुण्यकर्म है। उससे उसका हृदय शीघ्र ही समस्त पापों से शुद्ध हो जायगा और वह प्रेतयोनिका परित्याग कर देगा। उस दुर्गति से मुक्त होने पर बिन्दुग नामक पिशाच को मेरी आज्ञा से विमान पर बिठाकर तुम भगवान शिव के समीप ले आओ।'

सूत ही कहते हैं – शौनक ! महेश्वरी उमा के इस प्रकार आदेश देने पर गन्धर्वराज तुम्बुरू मन–ही–मन बडे प्रसन्न हुए। उन्होने अपने भाग्य की सराहना की। तत्पश्चात् उस पिशाच की सती साध्वी पत्नी चंचुला के साथ विमान पर बैठकर नारद के प्रिय मित्र तुम्बुरू वेगपूर्वक विन्ध्याचल पर्वत पर गये, जहाँ वह पिशाच रहता था। वहाँ उन्होने उस पिशाच को देखा। उसका शरीर विशाल था। ठोढ़ी बहुत बड़ी थी। वह कभी हँसता, कभी रोता और कभी उछलता था। उसकी आकृति बड़ी विकराल थी। भगवान शिव की उत्तम कीर्ति का गान करने वाले महाबली तुम्बुरू ने उस अत्यन्त भयंकर पिशाच को पाशों द्वारा बांध लिया। तदनन्तर तुम्बुरू ने शिवपुराण की कथा बाँचने का निश्चय करके महोत्सववयुक्त स्थान और मण्डप आदि की रचना की। इतने में ही सम्पूर्ण लोकों में बड़ेवेग से यह प्रचार हो गया कि देवी पार्वती की आज्ञा से एक पिशाच का उद्धार करने के उद्देश्य से शिव पुराण की उत्तम कथा सुनाने के लिए तुम्बुरू विन्ध्यपर्वत पर गये है। फिर तो उस कथा को सुनने के लोभ बहुत से देवर्षि भी शीघ्र ही वहाँ जा पहुँचे। आदरपूर्वक शिवपुराण सूनने के लिये आये हुए लोगों का उस पर्वत पर बड़ा अद्भुत और कल्याणकरी समाज जुट गया। फिर तुम्बुरू ने उस पिशाच को पाशों से बाँधकर आसन पर बिठाया और हाथ में वीणा लेकर गौरी पति की कथा का गान आरम्भ किया। पहली अर्थात विद्येश्वरसंहिता से लेकर सातवीं वायुसंहिता तक माहात्म्यसहित शिवपुराण की कीर्ति का उन्होंने स्पष्ट वर्णन किया। सातों संहिताओ सहित शिवपुराण का आदरपूर्वक श्रवण करके वे सभी श्रोता पूर्णत: कृतार्थ हो गये। उस परम पुण्यमय शिवपुराण को सुनकर उस पिशाच ने अपने सारे पापों को धोकर उस पैशाचिक शरीर को त्याग दिया। फिर तो शीघ्र ही उसका रूप दिव्य हो गया। अंगकान्ति गौरवर्ण हो गयी। शरीर पर श्वेतवस्त्र तथा सब प्रकार के पुरूषोचित आभूषण उसके अंगों को उद्भासित करने लगे। वह त्रिनेत्रधारी चन्द्रशेखररूप धारण हो गया। इस प्रकार दिव्यरूप देहधारी होकर श्रीमान बिन्दुग अपनी प्राणवल्लभा चंचुला के साथ स्वयं भी पार्वती वल्लभ भगवान शिव का गुणगान करने लगा। उसकी स्त्री को इस प्रकार दिव्य रूप सेसुशोभित देख वे सभी देवर्षि बडे विस्मित हुए। उनका चित्त परमानंद परिपूर्ण हो गया। भगवान महेश्वर का वह अद्भुत चरित्र सुनकर वे सभी श्रोता परम कृताथ हो प्रेम पूर्वक श्रीशिव का यशोगान करते हुए अपने अपने धाम को चले गये। दिव्यरूप धारी श्रीमान बिन्दुग भी सुन्दर विमान पर अपनी प्रियतमा के पास बैठकर सुख पूर्वक आकाश में स्थित हो बड़ी शोभा पाने लगा।

तदनन्तर महेश्वर के सुन्दर एवं मनोहर गुणों का गान करता हुआ वह अपनी प्रियतमा तथा तुम्बुरू के साथ शीघ्र ही शिवधाम में जा पहुँचा। वहा भगवान महेश्वर तथा पार्वती देवी ने प्रसन्नता पूर्वक बिन्दुग का बड़ा सत्कार किया और उसे अपना पार्षद बना लिया। उसकी पत्नी चंचुला पार्वती जी की सखी हो गयी। उस घनीभूत ज्योति: स्वरूप परमानंदमय सनातनधाम में अविचल निवास पाकर वे दोनों दम्पति परम सुखी हो गये।

–प्रस्तुतकर्ता – साथी

'नोटबंदी' भारत की आर्थिक गति में एक तीव्र झटका

ज्यादातर नेता देश की मूल समस्या को छोडकर अपने वोट बैंक की राजनीति करने में लगे रहते है। सस्ती लोकप्रियता हासिल करने का तरीका ढूंढते रहते है। पेड़ को सींचने के लिए उसके जड़ में पानी देना होता है, न कि उसके पत्तों और शाखाओं पर।

तो आइए नोटबंदी और काला धन पर चर्चा करने से पहले हम अपने देश की तीन मूल समस्याओं पर चर्चा करते है। ये तीन समस्याऐं है।

1. आबादी – सुरसा की तरह आबादी की समस्या हमारे देश में अपना विकराल रूप धारण करती जा रही है, परन्तु देश का कोई भी नेता वोटबैंक खो देने के डर से इस समस्या के हल के लिए कोई ठोस रणनीति बनाना नही चाहता। सभी सरकारे यह सोच कर इस में हाथ नही डालती कि उनका भी वही हाल होगा जो सन् 1978 में नसबंदी के कारण इंदिरा गांधी और उनकी पार्टी की हुयी थी, परन्तु श्रीमती इंदिरा गांधी के बाद कोई सरकार यह नही सोचती कि सन् 1978 के नसबंदी की नीति में आखिर कमी क्या थी? कानून जनहित में था फिर लोग क्यो सरकार से खफा हो गये। क्या इंदिरा गांधी नसबंदी का कानून अपने फायदें के लिए लायी थी? नहीं। तो फिर लोग नाराज क्यों हो गयें? क्योकि नसबंदी कानून लागू करने का तरीका गैर लोकतांत्रिक था। लोगों के मौलिक अधिकार का हनन किया गया था। दूसरे शब्दों में हम यूँ कह सकते है कि जिस लोकतांत्रिक व्यवस्था की वजह से श्रीमती गांधी सत्ता में आयी थी, वो उसी लोकतंत्र की हत्या कर रही थी। क्योकि बेसक आपका उद्देश्य राष्ट्रहित में हो, पर वह बहुमत के खिलाफ है तो उसे लोकतंत्र की हत्या कहा जाएगा। तानाशाही कहा जाएगा अर्थात् वह लोकतंत्र नही बल्कि राजतंत्र हो जाएगा।

परन्तु यह भी धूव सत्य है कि भारत जैसे विशाल आबादी वाला देश का विकास जनसंख्या नियंत्रण किये बगैर संभव नही है। अति आबादी के कारण हमारे देश में दिन पर दिन महंगाई, भ्रष्टाचार और बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। अतः हम कह सकते है कि हमारे देश में महंगाई, भ्रष्टाचार और बेरोजगारी जैसी समस्याओं का मूल कारण अति आबादी है। और यदि कोई नेता आबादी नियंत्रित किये बगैर हमारा सामूहिक विकास की बात करता है तो समझिए कि या तो उसे समस्याओं की जड़ का पता नही है या वह जनता को बेवकूफ बना कर वोट बैंक की राजनीति कर रहा है। अमेरिका की आबादी भारत की आबादी से पाँच गुणा कम है, जबकि अमेरिका का क्षेत्रफल भारत के क्षेत्रफल से लगभग तीन गुणा ज्यादा है। इसके बाद भी अमेरिका में बेरोजगारी एक समस्या बनी हुई है तो फिर भारत किस खेत की मूली है। अब कोई मुझे बताए कि नोटबंदी से बेरोजगारी कैसे समाप्त हो जाएगी? भ्रष्टाचार कैसे कम हो जाएगा। मंहगाई कैसे कम हो जाएगी। हाँ बेसक थोड़ा बहुत काला धन सरकार को हाथ लगे, परन्तु इस से ज्यादा सरकार को, राष्ट्र को और आम जनता को नुकसान होगा। मुद्रा के प्रवाह को बाधित किए बगैर यदि पूरी तैयारी से नोटबंदी की जाती तो निश्चय ही सरकार को बिना किसी राष्ट्रीय नुकसान के कालेधन से कुछ न कुछ लाभ होता। जिस तरीके से आनन–फानन में नोटबंदी की गयी। उससे देश की आर्थिक गति में एक तीव्र झटका लगा और धीरे–धीरे देश के तमाम लघु उद्योग, कुटीर उद्योग और निजी उद्योग बंद होने लगे, इन उद्योगों से जुड़े लोग बेरोजगार होने लगे। सैकड़ों लोगों ने बैंकों की पंक्तियों में दमतोड़ दिया। मासूम जनता यह जानकर काफी खुश थी कि सरकार कालाधन निकाल रही है। बडे बड़े धनकुबेरों की सामत आ जाएगी। बाजार में सभी चीजों की कीमत सस्ती हो जाएगी। बेरोजगारों को रोजगार मिल जाएगा। इसी उम्मीद से देश की

अधिकांश भोली भाली जनता सरकार के इस गैर लोक तांत्रिक नोटबंदी की पीड़ा को झेल रही थी। अब आप पूछ सकते है कि यह गैर लोक तांत्रिक कैसे हुआ? जनाब! जब आपको अपने पैसे बैंक से निकालने के लिए बेवजह रोक दिया जाए तो इसे गैर लोकतांत्रिक नही तो और क्या कहेंगे। आप जो चाहे टैक्स लगा सकते है, आप ट्रांजेक्शन टैक्स, दूसरे देशों की तरह लगा सकते है, परन्तु आप हमारे वर्षों की संचित धन को बैंके से निकालने पर रोक, बेवजह नही लगा सकते है। और जिस दिन आप ऐसा करते है। उस दिन आप संविधान में दिए गए हमारे मौलिक अधिकार को हमसे छीनकर हमारे ऊपर गैर लोकतांत्रिक तरीके से अत्याचार करते है।

अब आइए नोटबंदी के नफा और नुकसान पर भी हम चर्चा करते है।

नोटबंदी से जो देश की आर्थिक विकास में मंदी आयी उसकी वजह से देश में लगभग व्यवसाय, कारोबार, लेन देन प्रभावित रहा। जो लोग प्रति माह एक लाख सर्विस टैक्स या वैट जमा करते थे। वो 50 हजार पर आ चुके थे। जाहिर है कि ऐसे में जहाँ एक व्यवसायी के माध्यम से केन्द्र सरकार, राज्य सरकार को 50 हजार के कर का नुकसान होता है। तो देश के लाखों व्यवसायियों से होने वाला अरबों रूपये के टैक्स का राष्ट्रीय नुकसान हुआ होगा। इसके अलावा नये नोटों की छपायी और ढुलाई में जाहिर है अरबों का नुकसान हुआ होगा।

राज्यों का नुकसान केन्द्र का नुकसान और व्यवसासियों का नुकसान ये तीनों ही राष्ट्रीय नुकसान है। अगर 50 प्रतिशत व्यवसाय बाधित होता है, तो देश को एक दिन में अरबों का नुकसान होगा, तो आप अंदाजा लगा सकते है कि 50 दिन में देश को कितना नुकसान हो सकता है। बात यही खत्म नही हो जाती, बल्कि रूपयों की किल्लत जबतक खत्म नहीं हो जाती, देश आर्थिक मंदी के दौर से गुजरता रहेगा। इस तरह देश का सकल घरेलू उत्पाद (**GDP** में कमी आएगी। और जब **GDP** में कमी आएगी तो बाजार में जरूरत की चीजे कम पड़ जाएगी। लेहाजा इनके दामों में वृद्धि स्वतः हो जाएगी। व्यापक सर्वे के बिना यह कहना तो कठिन है कि कितना प्रतिशत **GDP** में कमी आएगी परन्तु मोटा मोटी हम देख सकते है। कि यदि 12 महिनों में देश का **GDP** 12 लाख करोड़ की है तो एक महीने में यह 1 लाख करोड़ की होगी। अब यदि दो महिनों में राष्ट्रीय व्यवसाय 50 प्रतिशत मार खाती है तो दो महीने में **GDP** दो लाख करोड़ के बजाए 1 लाख करोड़ होगी। अर्थात 1 लाख करोड़ का नुकसान होगा।

वर्षो की लगन और कड़ी मेहनत के बाद कोई व्यवसाय खड़ा होता है। अर्थात् पटरी पर आता है। इस तरह के अनेको व्यवसाय है जो नोटबंदी की मार से तहस नहस हो गया, अब उनका क्या होगा? जिन्हे सरकार का धन लूट कर खाने की आदत है, उन्हे क्या पता कि व्यवसायियों और बेरोजगारों की पीड़ा क्या होती है? वर्षो की कड़ी मेहनत के बाद जो बरोजगार व्यक्ति अपना व्यवसाय खड़ा किया था आपने उसे एक ही झटके में पुनः बेरोजगार कर दिया। क्या

आपका यही रोजगार सृजन करने का तरीका है? कही आप वही सावन के अंधे तो नही जिसे सालोभर बहार दिखता है।

नोट बदल देने से आतंकवाद और भ्रष्टाचार समाप्त हो जाता है। समझ में नही आता कि आप इस तरह का प्रचार कर जनता को बेवकूफ बनाते है या खुद को।

अरे! इस तरह से तो आपने एक नये भ्रष्टाचार को पैदा कर दिया। 500 और 1000 के पुराने नोट बाजार में 20 प्रतिशत और 30 प्रतिशत के कमीशन पर खुल्लम खुल्ला बदले जाने लगे थे। छापेमारी से आपने जितने लोगों को पकड़ा है। वे लोग इस अपराध में लिप्त कुल लोगों के एक प्रतिशत भी नही हैं। अर्थात् आपने न केवल एक नये भ्रष्टाचार को जन्म दिया बल्कि ईमानदार लोगों के जान माल को भी नुकसान पहुँचाया है। वक्त आने पर आपके ऊपर मुकदमा भी चल सकता है तैयार रहिएगा।

देश के अधिकांश बेरोजगारों के साथ–साथ कुछ व्यवसायी वर्ग के लोगों को लगा कि देश के अमीर लोगों का पैसा जब्त कर लिया जाएगा और फिर देश के पास इतना पैसा हो जाएगा कि देश के गरीबों और बेरोजगारों को काम करने की कोई जरूरत नहीं होगी। मोदी जी, घर बैठे इन लोगों की जरूरतों को पूरा करते रहेंगे। इन लोगों ने यह नही सोचा कि सरकार अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए यह सब कर रही है। उसने सातवाँ पे कमिशन मंत्रालयों को लागू तो कर दिया हैं, जबकि सातवाँ पे कमिशन केवल मंत्रालयों पर ही लागू किया है यहाँ भी आम जनता को बेवकूफ बनाया गया। परन्तु इसके लिए पैसे कहाँ से लाएगी? GST लागू तो कर दिया है, परन्तु इसके कारण जो घाटा होगा उसे कहाँ से पूरा करेंगी। मनगढंत प्रचार और नेताओं की विदेश यात्रा जैसी जरूरतों को कहाँ से पूरा करेगी। इसके लिए सरकार आम जनता को टैक्स के दायरें में लाना चाहती है। और यह तभी संभव है, जब कैशलेस पेमेंट हो अर्थात् भुगतान चैक के द्वारा, नेट बैंकिंग के द्वारा या अन्य ई–पेमेन्ट के स्रोत से किया जाये। इस तरह बाजार से आप बिना टैक्स पेड किये कोई सामान नही खरीद सकते है। इस तरह यह स्पष्ट रूप से दिखता है कि आबादी के अलावा महंगाई में वृद्धि के दो अतिरिक्त कारण है टैक्स में बढ़ोतरी तथा सरकारी फिजूल खर्ची।

अतः अब मै अपने देश के उन मासूम बेरोजगारों और गरीब जनता से ये कहना चाहता हूँ कि वो सरकार के इस झांसे में न रहें कि सरकार टैक्स में वृद्धि उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए कर रही है। यदि ऐसा होता तो सरकार गरीबी भत्ता या बेरोजगारी भत्ता का एलान करती। परन्तु ऐसा कोई रोड मैप दिखाई नही देता। इसके ठीक विपरीत सरकार ने जो सातवाँ पे कमिशन लागू किया है। उसे देखकर आप आसानी से समझ सकते है कि सरकार किस तरह से आम जनता का खून चूस कर नेताओं और नौकरशाहों का पगार दोगुना करने में लगी है। अर्थात् जहाँ एक ओर देश के गरीब और बेरोजगार खाने खाने को मोहताज है। वहीं देश के नेता और नौकर शाह गगनचुंबी पगार पाकर खाते खाते मरने पर लगे है।

अतः सरकार को कोई ऐसा कदम नहीं उठाना चाहिए जिससे देश का सकल घरेलू उत्पाद में कमी आये, बल्कि इसमें वृद्धि लाने के लिए टैक्स के ऊँचे दर को कम करना चाहिए । इसका एक दूसरा फायदा यह है कि अधिकांश लोग इधर उधर का रास्ता न अपनाकर सीधा टैक्स देना ज्यादा पसंद करेंगे, इस तरह कर दाताओं की संख्या भी बढ़ेगी। और 100 रू. का चोर पकड़ने के लिए 1000 रू. खर्च कर, एक चोर के पीछे दस सिपाही नही लगाने पड़ेंगे।

जब आप आय करते हैं तो आप से 30 प्रतिशत तक, आयकर लिया जाता है, पुनः जब इसे आप खर्च करने जाते हैं, तो आपसे 20 प्रतिशत तक विक्रय कर लिया जाता है। कहने का तात्पर्य कि आपकी आय का 50 प्रतिशत सुशासन के नाम पर सरकार आपसे लेती है, परन्तु सुशासन में सरकार आप को क्या देती है? क्या कभी आप ने सोचा है कि जो आपको मिलना चाहिए वो सरकार आपको नहीं दे रही है। यदि सरकार आपसे सुशासन के नाम पर 50 प्रतिशत तक टैक्स वसूलती है तो आप सरकार से निम्न अधिकार लड़कर ले सकते है। ये आपका मौलिक अधिकार है।

1. देश के सभी नागरिकों का निःशुल्क उपचार होना चाहिए।
2. सरकार को देश के बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार की गारंटी देनी चाहिए या उन्हे बेरोजगारी भत्ता देना चाहिए।
3. देश के प्रत्येक व्यक्ति के जानमाल की रक्षा की गारंटी सरकार को देनी चाहिए। जबकि वास्तविकता में ठीक इसके विपरीत होता है।

उपरोक्त तमाम सुविधाऐं देश के कुछ चुने हुए नेताओं को दी जाती है। जबकि देश की 90 प्रतिशत जनता को राम भरोसे छोड़ दिया जाता है। ऐसे में 50 प्रतिशत कर वसूल कर आम जनता को महंगाई का तोहफा देना सरकार द्वारा उठाया गया अनैतिक तथा स्वार्थपूर्ण कदम है।

– मिथलेश कुमार साथी

मो. 9939693150

सुरेश कुमार पोद्दार

कातिब ला. नं. 54/02

उर्फ पप्पू पोद्दार

पिता–स्व. राजेन्द्र प्र. पोद्दार,अवर निवंधन कार्यालय, महनार (वैशाली)

जमीन व मकान की रजिस्ट्री के लिए कागजात, दस्तावेज तैयार करवाने के लिए सम्पर्क करें।

ये पब्लिक है, सब जानती है।

बात 1975 की है, जब देश में श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा आपातकाल की घोषणा हुई थी। अमित नाहटा जी ने एक फिल्म निर्देशित की थी। जिसका नाम था '' किस्सा कुर्सी का''। आपातकाल में फिल्म पर रोक लगा दी गई हालांकि जनता पार्टी का शासन आने पर फिल्म रिलीज हुई। फिल्म कुछ ज्यादा कामयाब साबित नहीं हुई ये अलग बात है परन्तु फिल्म के कुछ गाने अच्छे थे। जैसे ये पब्लिक है सब जानती है। अजी अन्दर क्या है बाहर क्या है से सब कुछ पहचानती है।

दूसरा गाना था, क्या मिलिए ऐसे लागों से जिन की फितरत छुपी रहे, असली चेहरा सामने आए, नकली सूरत छिपी रहे। फिल्म सिल्वर स्क्रीन पर कोई धमाल नहीं कर पायी। आपातकाल में रिलीज भी नही हुई फिर भी भारतीय राजनीति को एक नई दिशा दे गई। 21 महीने में आपातकाल समाप्त हुआ। आम चुनाव हुए। कांग्रेस (इन्दिरा) चुनाव में बुरी तरह पराजित हुई पहली बार देश में मोरारजी देशाई जी के नेतृत्व में देश में गैर कांग्रेस सरकार का गठन हुआ। अब लेख की मुख्य विषय वस्तु पर आते है। इसके लिए आपातकाल के पूर्ववर्ती घटनाक्रम को समझना जरूरी है।

श्री लाल बहादुर शास्त्री जी के निधन के बाद और कार्यवाहक प्रधानमंत्री श्री गुलजारी लाल नन्दा जी के 13 दिन के कार्यभार के बाद 1966 में श्रीमती इन्दिरा गांधी देश की पहली महिला प्रधानमंत्री चुनी गयी। 1971 में वे दोबारा प्रधानमंत्री चुनी गयी। उनके कुशल नेतृत्व में भारत ने पाकिस्तान युद्ध जीता। केवल यही नहीं पाकिस्तान दो हिस्सों में भी बट गया। पूर्वी पाकिस्तान में शेख मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व में विद्रोह हुआ। जिसे भारत ने अपना सैन्य समर्थन दिया जिसके बल पर 1971 में पाकिस्तान के 92 हजार सैनिकों ने जनरल न्याजी के नेतृत्व में भारत के जनरल अरोडा के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। शायद विश्व इतिहास की ये पहली घटना थी। जब इतनी बडी संख्या में किसी सैना ने आत्मसमर्पण किया था, इसी के साथ पूर्वी पाकिस्तान को बांग्लादेश के रूप में मान्यता मिल गई और भारत बांग्लादेश को मान्यता देने वाला पहला राष्ट्र है। पाकिस्तान अपनी इस हार को कभी भुला नही पाया। परन्तु ये बात वो अच्छी तरह समझ गया कि भारत का सामाजिक ढाँचा व सैन्य आत्मबल इतना मजबूत है कि वह इसे सीधे युद्ध में कभी भी पराजित नहीं कर सकता है।

खैर इसके साथ ही इतनी बडी सफलता पाकर जहाँ इन्दिरा गाँधी जी में कुछ अहंकार कहे या आत्मबल बढ़ा वहीं विरोधियों को लगा कि अब कभी सत्ता उनके हाथ नही आ पाएगी। वास्तव में ये वो समय भी था। जिसमें भारत में भ्रष्टाचार अपनी जड़े फैलाने लगा था। महंगाई और गरीबी बढ़ने से आम आदमी भी कुछ बेचैनी महसूस कर रहा था। पूर्व स्वास्थ्य मंत्री श्री राज नारायण ने जो इन्दिरा जी के खिलाफ चुनाव लडे थे। अदालत में इन्दिरा जी के चुनाव को चुनौती दी मामले की सुनवाई इलाहाबाद उच्च न्यायालय में हुई। 12 जून 1975 को जस्टिस सिंहा के नेतृत्व में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने उन पर शाम 3.45 पर एक अप्रत्यासित फैसले को सुनाया जिसके अन्तर्गत श्रीमती इन्दिरा गाँधी के चुनाव में धांधली को स्वीकारते हुए चुनाव को निरस्त करके फैसला दिया गया। इसके अलावा श्री जय प्रकाश नारायण जी भ्रष्टाचार और भुखमरी के खिलाफ अपना आन्दोलन सर्वोदय के नाम से चला रहे थे। इससे प्रभावित हो पूर्व प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर जो कि उस समय इन्दिरा कांग्रेस में थे। जिसे उस समय कांग्रेस कहते थे को 33 सांसदों के साथ छोड़ दिया ये सब चीजे इन्दिरा जी की पकड़ को लगातार कमजोर बना रही थी। इन्दिरा जी एक बहुत ही मजबूत इरादे वाली महिला थी। अतः वो इन सभी घटनाक्रमों के कारण आत्म समर्पण नही करना चाहती थी। इसके चलते इन्दिरा जी ने आनन फानन में एक कड़ा फैसला ले डाला। 25 जून 1975 शाम आठ बजे कैबिनेट ने आपातकाल लगाने का प्रस्ताव पारित किया और साढे आठ बजे उस पर तत्कालीन राष्ट्रपति श्री फखरूद्दीन अली अहमद की मोहर लग गई। 9 बजे शाम सभी विपक्षी नेताओं की धरपकड़ शुरू हो गई। और सुबह 1.30 तक लगभग सभी नेता जिनमें मुख्यरूप से श्री जय प्रकाश नारायण, चन्द्रशेखर, मोरारजी देसाई, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री लालकृष्ण आडवाणी, श्री राजनारायण, श्री जॉर्ज फर्नांडीस, श्री मुरली मनोहर जोशी के अतिरिक्त हजारों विपक्षी विधायक पार्षद और यहाँ तक कि विपक्षी विचार धारा रखने वाले ग्राम प्रधानों व सामान्य कार्यकर्ताओं को भी नही बख्सा गया। सुबह होने तक लगभग पूरा विपक्ष सलाखों के पीछे कर दिया गया।

अब 21 महीनों तक सुधारों का सिलसिला चला। इन्दिरा जी ने इसे सुधारों की संज्ञा तो विपक्ष ने इसे लोकतंत्र की हत्या करार दिया। इन्दिरा जी ने जनता को प्रसन्न करने के लिए गरीबी हटाओं का नारा दिया तथा अपने 20 सूत्री कार्यक्रम की घोषणा की। इससे पहले इन्दिरा जी 1969 में बैंको का राष्ट्रीयकरण व 1970 राजघरानों के प्रिवीपर्स समाप्त कर चुकी थी। प्रिविपर्स से मतलब सरकार द्वारा पूर्व राजघरानों को दी जाने वाली उस राशि से है जिसे सरकार उनकी रियासतें लेने के बाद उनके खर्चों के लिए आवश्यक समझकर देती थी।

20 सूत्री कार्यक्रम के जरिए इन्दिरा जी गरीबों, अनुसूचित जातिओं व जन जातिओं और अल्पसंख्यकों के दिल में हमेशा के लिए जगह बनाना चाहती थी। इन्दिरा जी ने सम्पति के अधिकार को मूल अधिकारों से निकालकर सामान्य अधिकार बनाने वाला संविधान संशोधन बिल पास कराया। इसके साथ ही नागरिकों के लिए मूल अधिकारों के साथ मूल कर्तव्यों को भी संविधान में शामिल किया। मेरी राय में ये एक अच्छा कदम था। क्योंकि यदि सब अपने कर्तव्यों का स्वेच्छा से पालन करे तो बाकी लोगों को स्वतः अधिकार मिल जाते है। अतः अधिकार पाने के लिए कर्तव्य का पालन जरूरी है।

शायद इन्दिरा जी अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण गरीबों का मसीहा बनने की अपनी मुहिम में कामयाब हो जाती क्योंकि आपातकाल में विरोध का मुख्य श्रोत नेता बन्द थे। अपराधी सब डर के मारे छूप गये थे। हर कोई जानता था। कि अगर किसी छोटे अपराध में भी पकड़ा गया तो कोर्ट जाने की बात तो अलग कोई जान भी नही पाएगा कि कहाँ गया। परन्तु शायद नियति को ये मंजूर नही था। अतः निरंकुश होने के कारण निर्दोषों पर पुलिस के अत्याचार बढ़ने लगे। इन्दिरा जी के छोटे पुत्र श्री संजय गांधी जिनके हाथ में उस समय युवा कांग्रेस की बागडोर थी सक्रीय हो गये। उन्होने अलग से अपने 4 सूत्री कार्यक्रम की घोषणा की जिनमें एक इन्दिरा जी के सूत्री कार्यक्रम का सूत्र जन संख्या नियंत्रण भी शामिल था। वास्तव में ये बहुत ही दूरदर्शी कदम था। क्योकि यदि हम तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या पर नियंत्रण नहीं रखेंगे तो हमारे सीमित संसाधन कभी पूरी आबादी को संतुष्ट नही कर सकते है। क्योंकि बढ़ती हुई जनसंख्या दलित व अल्पसंख्यकों के साथ समाज के सभी वर्ग ये भुलाकर कि सरकार ने कुछ अच्छे काम भी किए हैं सरकार के विरोधी हो गऐ। नोएडा नाम श्री संजय गांधी द्वारा दिया गया। खादर की बेकार पडी भूमि जो कृषि योग्य नहीं थी। एक औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विकसित किया गया। किसानों को बेकार पडी भूमि का अच्छा मूल्य मिला, व्यवसायी को राजधानी के निकट व्यवसायिक स्थल मिला, क्षेत्रीय लोगों को रोजगार व सरकार को कर मिला। सर्वांगीण विकास हुआ परन्तु नसबंदी की ज्यादतियों न सब गुड गोबर कर दिया। सड़कों के साथ वृक्षारोपण भी समान रूप से लाभकरी योजना थी। जिससे वृक्षारोपण करने वालों को रोजगार, राहगीरों को छाया और सरकार को उमदा किस्त की लकड़ी मिलती थी। अभी जो अखिलेश जी ने पुरानी सड़कों को हाइवे के रूप में विकसित किया है मैं समझता हूँ यदि सरकार ने पेड़ कटाई का सही प्रबंधन किया होगा तो पेड़ों से प्राप्त आय हाईवे पर हुई खर्चे से कुछ ज्यादा ही होगी।

संजय गांधी के बाद दूसरा नम्बर श्री बंसीलाल का था। ये उस समय हरियाण के मुख्यमंत्री थे। इसलिए इन्दिरा जी की नजरों में अपने आपको विशेष सीन देने के लिए श्री संजय गांधी के अन्ध भक्त बने हुए थे। नसबंदी के लिए ज्यादती करने के साथ–साथ भ्रष्टाचार की बहती गंगा में हाथ धोने से भी नहीं चूके। संजय गाँधी के विश्वास पात्र होने के कारण कोई इनकी तरफ उंगली नही उठा सकता था। इन्होने इस आढ़ में खूब धन एकत्र किया।
इनके साथ ही इनके पुत्र श्री सुरेन्द्र जो कि उस समय युवा कांग्रेस में सक्रीय थे। अपने पिता श्री बंसी लाल के पदचिन्हों पर चलकर श्री संजय गाँधी के

खासम खास की गति से संसाधनों का विस्तार कर पाना किसी भी प्रगतिशील देश के लिए सम्भव नहीं है।

इससे हमें शिक्षा मिलती है कि लोकतंत्र में सरकार को जनहित और जन प्रियता दोनों के बीच सामंजस्य बैठाना अति आवश्यक है। आप कितना भी अच्छा फैसला ले रहे है अगर लोग उससे खुश नहीं है तो चुनाव में आप उसका परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहें। देश की बहुत बडी आबादी अशिक्षित व गरीबी रेखा से नीचे अपना जीवन यापन करती है। नेता यदि कोई सुधार अपने आप को उस स्तर पर रखकर नहीं करता तो असफलता निश्चित है।

आपातकाल में श्री संजय गाँधी, श्री देवी लाल उनके पुत्र श्री सुरेन्द्र, श्री जगमोहन और श्री धीरेन्द्र ब्रह्मचारी ये वो नाम है। जो श्रीमति इन्दिरा गाँधी के अतिरिक्त बहुत शक्तिशाली हो गऐ थे।

श्री संजय गाँधी जैसा कि मैने पहले बताया श्रीमती इन्दिरा गाँधी के छोटे पुत्र थे। जिनकी एक विमान दुर्घटना में असामयिक मृत्यु हो गई। ये इन्दिरा जी के नम्बर 2 थे। इन्होने अपने महत्वाकांक्षी चार सूत्री कार्यक्रम को आपातकाल में शुरू किया। जिनमें एक जनसंख्या नियंत्रण, सड़कों के साथ पेड़ लगाना व बेकार पडी भूमि का प्रयोग मुख्य है। इन्होने जनसंख्या नियंत्रण के लिए नसबंदी पर जोर दिया, सभी सरकारी अफसरों के लिए कोटा निश्चित कर दिया गया। उन सरकारी अधिकारियों ने बजाय लोगों को नसबन्दी के लाभ बताने के अपना कोटा पूरा करने के लिए नसबन्दी शुरू कर दी। बस अड्डे, रेलवे स्टेशन, बाजार और अस्पताल में जो भी मिला सबकी नसबंदी कर दी गई क्योंकि सभी श्री संजय गाँधी की नजर में अपने आपको ऊपर उठाना चाहते थे। इस काम पुलिस अफसरों और गाँवों से जुडे ग्राम सेवकों आदि का खुलकर प्रयोग किया नतीजा ये हुआ कि बने हुए थे। ये भी संजय गाँधी के नाम पर ज्यादतियों व भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे थे। क्योंकि इन्दिरा जी के पास इस समय विश्वस्त साथियों की कमी थी। अत: वे जानकर भी इनका विरोध नही करती थी।

इसके बाद संजय गाँधी की खास पसंद जो वास्तव में प्रशंसनीय है ईमानदारी की जीति जागती मिसाल श्री जगमोहन थे जो उस समय दिल्ली विकास प्राधिकरण के चेयरमेन थे। उनकी प्रशासनिक क्षमता, कुशल नेतृत्व और ईमानदार निर्णय का आज भी भारतीय राजनीति में कोई शानी नही है। उस समय तुर्कमान गेट का मुस्लिम बहुल क्षेत्र लगभग छोटा पाकिस्तान बन चुका था। दिन में भी पुलिस वाले उस क्षेत्र में जाने से डरते थे। श्री जगमोहन ने तुर्कमान गेट को नोटिस देकर खाली कराया और जिन लोगों ने खाली करने से मना किया उन्हे जबरन वहाँ से उठाकर इन्दलोक में बसाया गया। इससे सरकारी जमीन खाली हुई वहाँ बसने वालों को इन्द्रलोक में वैकल्पिक स्थान मिला और जनता व प्रशासन के लिए आतंक का पर्याय बना क्षेत्र समाप्त हुआ। इसके बाद श्री जगमोहन जम्मू और कश्मीर के राज्यपाल रहे जहाँ उन्होने वैष्णों माता मन्दिर का अधिग्रहणकर प्रशासनिक सुधार किया आज माता मन्दिर के स्वच्छ विकसित रास्ते व स्वच्छ वातावरण श्री जगमोहन जी की देन है। इसके बाद वो श्री अटल बिहारी की कैबिनेट में नगर विकास मंत्री रहे और दिल्ली सुन्दर व साफ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अन्त में नाम श्री धीरेन्द्र ब्रह्म चार का आता है। वैसे तो ये इन्दिरा जी के योग गुरू थे। परन्तु सरकार की कृपा से इन्होने कई आश्रम बनाऐ और जम्मू कश्मीर में एक गन फैक्ट्री भी थी। वास्तव में इन्हें भ्रष्टाचार का पर्याय माना जाता था।

–रोहिताश सिंह

बल, ज्ञान और धन का सदुपयोग करें

मनुष्यों को अपने बल, ज्ञान और धन का सही समय पर उपयोग करना चाहिए। बल का उपयोग हमेशा दूसरों की रक्षा के लिए करना चाहिए। ज्ञान का उपयोग स्वहित में करना चाहिए। धन का उपयोग दीन दुखियों के लिए, लाचार, अबला और अनाथ के लिए करना चाहिए। बेसहारों को सहारा देना मनुष्य का धर्म है। तथा इसी में मनुष्य का पुरूषार्थ है।

अधर्म के रास्तें पर बल का उपयोग कभी नही होना चाहिए क्योंकि निर्बल और असहाय को सताना सबसे बड़ा अपराध है। अत: मनुष्य को, निर्बल को सहारा देने उनकी रक्षा करने एवं आसुरी प्रवृत्ति के विनाश के लिए बल का उपयोग करना चाहिए। मनुष्य को ज्ञान की ज्योति से अपने ह्रदय के अंधकार को मिटाना चाहिए। इससे आत्मबल दीर्घ बनता है और पुरूषार्थ आता है। ज्ञानी का ह्रदय सदा उदार और धार्मिक होता है। दान की महत्ता सर्वोपरी है–'देयम् दीन अनाथ च वित्तम्' अर्थात् दान उसी मनुष्य को दें, जो इसके अधिकारी है। उदाहरणस्वरूप सामर्थवान को दान देना तृप्तिवान को भोजन कराना तथा दिन में दीपक जलाना बेकार है।

मनुष्यों को धन का संग्रह करना चाहिए, किन्तु इसका सही उपयोग होना चाहिए। दान, भोग और नाश ये सभी धन की तीन गतियाँ है। नाश तो स्वत: नाश ही है। इनकी अपनी कोई सत्ता नही होती है। बलि, ज्ञानी और धनी मनुष्यों को अपना जीवन परोपकार में अर्पित करना चाहिए क्योंकि परोपकार से बढ़कर कोई दूसरा पुण्य नहीं है। नि:स्वार्थ भाव से सेवा करना, जनकल्याण करना ही पुरूषार्थ है। जो मनुष्य पुरूषार्थी है वे अपने बल, ज्ञान और धन का समय पर सदुपयोग करता है।

जितेन्द्र प्रसाद चौधरी
अधिवक्ता, जिला व्यवहार न्यायालय, वैशाली (हाजीपुर) – 844101
मो. 9431660769
प्रदेश अध्यक्ष, बिहार, साफ पार्टी

संजय कुमार सिंह
प्रखण्ड अध्यक्ष, साफ पार्टी

आप सभी को
लोहड़ी, मकर संक्रान्ति व गणतंत्र दिवस
की
हार्दिक शुभकामनाओं
के साथ साथ नया साल मुबारक हो।

भारतीय सिने पटल पर उभरता सितारा 'कुमार वैभव'

सक्षिप्त परिचय

जन्म व प्रांरभिक शिक्षा :– साधारण ग्रामीण परिवार में 23 अक्टूबर 1990 को उतर प्रदेश के गाँव प्यावली तत्कालीन जिला गाजियाबाद में जन्मे बालक का नाम माता पिता ने कुमार वैभव रखा। जन्म के कुछ समय बाद ही इनके माता पिता इन्हें लेकर दिल्ली आ गये। इनके एक बडे भाई व बहन भी है। अपने बाल्य काल से ही चपल कुमार चैभव की प्रारम्भिक शिक्षा दिल्ली में ही स्कूल में हुई। चौथी कक्षा में ही इन्हे जूडों में राज्य स्तर पर ताम्रपत्र से सम्मानित किया गया, यह पुरूष्कार इन्हे जी. आर. एम. स्कूल में जाने माने फिल्मी कलाकार श्री अरूण बाला जी द्वारा दिया गाया । शायद फिल्म कलाकार अरूण बाला जी के व्यक्तित्व ने बाल्य मन पर कही गहरी छाप छोड़ दी थी। जिसे आगे चलकर फली भूत होना लगभग निश्चित था। स्कूल स्तर पर भी इन्होने कई नाटकों का मंचन किया जिसमें इनके अभिनय की खांशी प्रंसशा हुई।

उच्च शिक्षा :– CBSE से बारहवीं की परीक्षा उतीर्ण कर इन्होने दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। यहाँ कला स्नातक के अपने अध्ययन के अन्तर्गत अभिनय कला का भी अध्ययन किया। और कालेज के सांस्कृतिक सेल में विभिन्न जिम्मेदारियाँ निभाई। अनेक सांस्कृतिक उत्सवों में इनके अभिनय की प्रशंसा हुई। दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान ही इनका परिचय आरोही नामके एक नाटय संगठन के साथ हुआ। आरोही के साथ इन्होंने विभिन्न ज्वलन्त सामाजिक समस्याओं पर अनेको नुक्कड नाटक किऐ।

अभिनय का गहन अध्ययन :– दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद ये जाने माने अभिमनय गुरू व नाट्य निर्देशक श्री अरविन्द गौड के ग्रुप में शामिल हो गये वहाँ इन्होंने श्री अरविन्द गौड के कुशल नेतृत्व में प्रतिदिन लगभग 15 घण्टे अभिनय कला की गहराइयों को समझा कई स्टेज शो व अनेकों नुक्कड़ नाटकों में अपने अभिनय की छाप छोड़ी।

श्री राम कला केन्द्र में रिपेरेटरी :– इनकी अभिनय कला से प्रभावित होकर 2012 में इन्हें श्री राम कला केन्द्र, दिल्ली ने अपने यहाँ रिपेरेटरी नियुक्त किया श्री राम कला केन्द्र में कार्य करते हुए इन्हें लगा कि मंजिल पाने के लिए कहीं आगे बढना होगा और 2013 में श्रीरामकला केन्द्र को छोड़ दिया।

तुगलक एवं दारा का मंचन :– इसके बाद राष्ट्रीय नाट्य विद्याालय के कई निर्देशकों के साथ अखिल भारतीय स्तर पर कई बडे नाटकों का मंचन किया जिनमें एक तुगलक जिसका श्री भानू भारती जी के निर्देशन में पुराना किला के प्रांगण में भव्य मंचन हुआ। इसमें मुम्बई सिने जगत के कई जाने माने कलाकारों जैसे श्री यशपाल शर्मा व हिमानी शिवपुरी आदि ने भाग लिया। नाटक में 100 से अधिक कलाकारों ने भाग लिया जिनमें से अधिकांश राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से किसी न किसी रूप में जुडे थे। दारा भी अपने आप में बहुत ही महत्वपुर्ण नाटक है। इसके निर्देशन व अभिनय की भी कला जगत में बहुत प्रशंसा हुई।

माया नगरी मुम्बई :– मूल उद्धेश्य अधिकांश कलाकारों का मुम्बई की माया नगरी में अपने आप को स्थापित करना होता है। इसी कडी में कुमार वैभव भी दिल्ली के नाट्य जगत को अलविदा कह जनवरी 2015 में इस सपनों के शहर में पहुँच गऐ।

भाई फादर इकबाल और 31 अक्टूबर :– कुछ समय तक विभन्न नाटको जैसे सावधान इण्डिया, क्राइम पैट्रोल जिन्दगी डॉट काम और एच पी के लिए एड पर काम किया। इसके अलावा कई काम जैसा कि किसी भी नए कलाकार को मुम्बई में करना पडता है। कुछ वैब सीरीज में भी काम किया। इसके बाद तीन फिल्मों में एक साथ काम मिला। 1. राय, मई फादर इकबाल और 31 अक्टूबर इनमें माई फादर इकबाल और 31 अक्टूबर 21 अक्टूबर 2016 को अखिल भारतीय स्तर पर रिलीज हुई दोनों में कुमार वैभव के अभिनय को मीडिया ने खासा सराहा। और आलोचको ने माना कि इस कालाकार से सिने जगत को काफी सम्भावनाऐं है।

–रोहिताश सिंह

उत्तराखण्ड की पावन भूमि पर अद्भुत अलौकिक तीर्थ जागेश्वर धाम

भगवान शिव का धाम जो कि बाबा धाम के नाम से जाना जाता है उत्तराखण्ड के कुमांउ क्षेत्र के अल्मोडा जिला में स्थित है। अलमोडा से पिथौरागढ़ रोड पर आर तोला गाँव से 3 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ भगवान शिव के लगभग 124 मन्दिर है। इसे भगवान शिव के नागेश्वर ज्योर्तिलिंग के रूप में मान्यता प्राप्त है हालांकि नागेश्वर को गुजरात में द्वारका के पास भी माना जाता है। यहाँ की विशेषता है कि यहाँ बारह महिने सर्दी रहती है। मन्दिर एक छोटी नदी के किनारे स्थित है। आस पास चीड व देवदार के पेडों से आच्छादित ऊँची पर्वतीय चोटियाँ हैं। आस पास में देवदार के घने वन केवल मन्दिर के पास ही पाए जाते हैं। गर्मी के मौसम में यहाँ आने पर गर्मी से बड़ी राहत व शान्ति मिलती हैं।

यहाँ जाने के लिए अगर आप रेल मार्ग से जाना चाहते है तो दिल्ली से काठगोदाम तक भारतीय रेल द्वारा और आगे बस या टैक्सी द्वारा जा सकते है। यदि बस द्वारा जाना चाहते है। तो दिल्ली आनन्द विहार अड्डे से सुबह 6 बजे पिथौरागढ़ के लिए सीधी बस है जो लगभग 450 कि.मी. की दूरी लगभग 12 घण्टे में तय कर शाम 6 बजे के आस पास आरतोला पर उतार देती है वहाँ से आप 3 कि.मी. की यात्रा पैदल या जीप आदि से कर जागेश्वर धाम पहुँच सकते है। वैसे जागेश्वर पहाडी पर स्थित एक पौराणिक गाँव है। बाबा धाम में जागेश्वर के अतिरिक्त पहाडों की ऊँचाइयें में कुछ अन्य मन्दिर भी हैं।

मुख्य मन्दिर जागेश्वर धाम, अल्मोड़ा

वृद्ध जागेश्वर :– जागेश्वर मुख्य मन्दिर के सामने से पहाडों में एक रास्ता चढता है जो लगभग चार कि.मी. पहाडी पगडंडियों पर चलने के बाद वृद्ध–जागेश्वर मन्दिर में पहुँचाता है। मन्दिर इतनी ऊँचाई पर है कि मन्दिर प्रांगण से महान हिमालय की बर्फ आच्छादित चोटियाँ साफ दिखाई देती है। मन्दिर तक सड़क मार्ग द्वारा भी अलमोडा से भी जाया जा सकता है। मन्दिर सामान्य लेकिन पत्थरों से निर्मित स्थापत्य कला का एक बेजोड़ नमूना है।

सरयू नदी, अल्मोड़ा

जाखल सैम मन्दिर:– ये मन्दिर भी जागेश्वर धाम के ऊपर की पहाडियों में लगभग 4 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। पहाड़ी रास्ता चीड के वनों से होकर जाता है। जो बहुत ही मनोरम है। रास्ते में कुछ छोटे पहाड़ी गाँव भी पडते है। कुछ नास्पाती व सेब के बाग भी अभी नये लगे हुए है। मन्दिर की छत के बीच से एक पीपल का बहुत बड़ा पेड़ निकला हुआ है। मन्दिर में यात्रियों के ठहरने के लिए एक बडी धर्मशाला का भी प्रवन्ध है मन्दिर के पास ही भारतीय कृषि अनुसंधान सस्थान का फार्म भी है। मन्दिर सडक मार्ग से पिथौरागढ़ रोड से जुडा है।

जागेश्वर मन्दिर के पास ही जय अम्बे गैस्टहाउस ठहरने के लिऐ बहुत ही सुन्दर एवं स्वच्छ सुसज्जित स्थान है। जिसका संचालन सूरज एण्ड ब्रादर्स के सर्वेसर्वा पं. जय भगवान कौशिक जी बडी लगन से करते है।

– रोहिताश सिंह

साफ बात में विज्ञापन की दर तालिका

	कलर	ब्लैक एण्ड व्हाईट
फुल पेज साईज	5000/–	2500/–
हाफ पेज साईज	3000/–	1500/–
क्वार्टर पेज साईज	2000/–	1000/–
विजिटिंग कार्ड साईज	500/–	250/–
एक पंक्ति का विज्ञापन	200/–	100/–

(फोन नं. तथा व्यवसाय का विवरण)

इस पत्रिका में विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें – 9911229576, 7320965424

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता के लिए भी आप उपरोक्त नम्बर पर सम्पर्क कर सकते है।

आप के बच्चों के सुनहरे भविष्य के लिए एकमात्र विकल्प

B.S. CONVENT SCHOOL

Gali No. 12 & 13, I Block, Shivram Park, Nangloi, Delhi-41

Admission के लिए सम्पर्क करें।

M. 9350998782, 9958172990

अण्डमान निकोबार यात्रा वृतांत

बचपन से ही सुनता आया था कि स्वतन्त्रता सैनानियों को यातनाऐं देने के लिए स्वतन्त्रता से पूर्व अंग्रेज सरकार काला पानी में भेज देती थी। थोड़ा बडे होकर मालूम हुआ कि काला पानी अण्डमान निकोबार द्वीप समूह को कहते है। जो भारत वर्ष का एक हिस्सा है। बाद में पता चला कि भारत के बंगाल की खाड़ी में 573 द्वीपों का समूह है वहाँ की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में अंग्रेज सरकार ने 19वीं शताब्दी में एक जेल बनाई थी। जिसे सेलूलर जेल कहते थे। इससे पूर्व प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के कैदियों को सजा देने के लिए निकोबार में एक बाइपर नामक जेल का निर्माण किया। वाइपर एक जहरीला सर्प होता है। जो इस क्षेत्र में बहुतायत से पाया जाता था। इसी के नाम पर इस जेल का नाम वाइपर जेल पड़ा। यहाँ कुछ कैदी अमानवीय यातनाऐं नही सह पाने के कारण मर जाते थें। और कुछ को वाइपर सर्प द्वारा डसा जाता था। जिससे उनकी मृत्यु हो जाती थी। सैलूलर जेल में कई जगह भारत सरकार ने बडे बडे बोर्ड लगवा दिऐ है। जिन पर काले पत्थर पर उन वीर स्वतन्त्रता सैनानियों के नाम लिखे है। जिन्हे सैलूलर जेल में अमानवीय यातनाओं को सहना पड़ा। यहाँ यह कहना असंगत नही होगा कि उनमें बहुत बड़ी तादाद बंगाल के वीरों की है। अब दूसरी बात आती है वाइपर जेल में ऐसे अनगिनत योद्धाओं की मृत्यु हो गई जिनका इतिहास में कही नाम नहीं है।

सैलूलर जेल में लम्बे समय तक यातनाऐं झेलने वाले नामों में एक सर्व विदित नाम विनायक दामोदर सावरकर का भी है। जिन्हे आम तौर पर वीर सावरकर के नाम से जाना जाता है। वे 15 वर्षों तक सैलूलर जेल में रहे वे अपनी सेल की दीवारों पर देश भक्ति की कविताऐं अपने खून से लिखते थे। खून मिलना वहाँ मुश्किल नही था। क्योंकि दिया गया काम पूरा न होने पर कैदियों को सजा के रूप में कोडे मारे जाते थे। जिससे उनका शरीर लहू लूहान हो जाता था। ऐसे वीरों की गाथा सुनकर और पढ़कर दिल में बार–बार उस तीर्थ स्थान को देखने की इच्छा होती थी। परन्तु अण्डमान निकोबार जाना काफी महंगा है। अत: ये यात्रा बार–बार टल जाती थी। अन्त में वो समय आ गया और 2 नवम्बर 2016 हमारे दिल्ली व चेन्नई से पोर्ट ब्लेयर जाने का कार्यक्रम फाइनल हो गया। 2 नवम्बर 2016 को राजधानी एक्सप्रेस से चेन्नई तक की टिकट हुई जिसने हमे तीन नवम्बर को 8 बजे शाम चेन्नई पहुँचना था, परन्तु पोर्ट ब्लेयर के लिए फ्लाइट 6 नवम्बर को थीं अत: 4 और 5 नवम्बर का समय हमे चेन्नई में ही बिताना था। इस लिहाज से हमने 4 तारीख के लिए तिरूपति बालाजी दर्शन और 5 नवम्बर का चेन्नई के स्थानीय दर्शन को भी अपने कार्यक्रम में शामिल कर लिया।

2 नवम्बर को 2 बजे दोपहर टैक्सी से घर से निकल कर 4 बजे हम राजधानी के एसी–2 डिब्बे में सवार हो गऐ, गाडी अपने नियत समय पर स्टेशन से चल दी। डिब्बे में लगभग 30 प्रतिशत सीटे खाली थी। ज्यादा लोगों का रास्ते के किसी स्टेशन से प्रवेश नही हुआ। केवल दो यात्री ग्वालियर से और 2 वारंगल से चढ़े। राजधानी एक्सप्रेस के सफर का अनुभव इस बार ज्यादा अच्छा नही था। हालाकि रेल मन्त्रालय सेवा में सुधार के तरह – तरह के वादे और विज्ञापन देता है। इसी आधार पर बार–बार किराया भी बढ़ाया जाता है। बावजूद इसके पूर्व के मुकाबले सफाई और सेवा का स्तर

नॉर्थ वे आईलैण्ड, अण्डमान निकोबार

सैलूलर जेल, अण्डमान निकोबार

खराब था। परन्तु हम सही समय पर 3 तारीख को चेन्नई पहुँच गए, हमारे लिये ये भी काफी था।

चेन्नई हम 3 नवम्बर रात 8.30 पर पहुँचे, इसलिए सीधे गैस्ट हाऊस चले गए। रात का खाना ट्रेन में ले चुके थे। अत: जाकर सो गए। सुबह 6 बजे तिरूपति के लिए हमारी ट्रेन थी। अत: उठकर रेलवे स्टेशन चले गऐ क्योंकि तिरूपति बालाजी दर्शन भी हमारी इसी यात्रा का हिस्सा था। तिरूपति पहुँकर तिरूमाला पर भगवान वैंकटेश के दर्शन के लिए टैक्सी द्वारा गऐ। दर्शन का समय 3 बजे का था। अत: ऊपर पहुँचकर पहले दोपहर का खाना खाया। फिर दर्शन करने के लिए चले गए। जहाँ इस बार एक नई बात देखने को मिली। श्रद्धालुओं को जीन्स आदि गैर पारम्परिक पोशाक में दर्शनों की मनाही थी। मैं पहले ही कुर्ता पजामा पहनकर गया था। अत: कोई परेशानी नही हुई। दर्शन भी अपेक्षाकृत कम समय में अर्थात् 2 घण्टे में हो गए। दर्शन कर पाँच बजे निकले समय काफी हो चुका था। हमे चेन्नई पहुँचना थ। अत: वहीं से सीधे चेन्नई के लिए बस में सवार हो गए। रात 9 बजे चेन्नई पहुँचे खाना खाकर सो गए। अगले दिन अर्थात् 5 नवम्बर को मरीना बीच देखने गए, जहाँ पहली बार हमने देखा कि समुद्री बीच का पानी इतना गन्दा भी हो सकता है। कुछ विक्रेता जो बच्चों के खेलने खाने का सामान कैण्डी आदि बेच रहे थे उत्तर प्रदेश से भी थे। 6 नवम्बर को 12 बजे पोर्ट ब्लेअर के लिए फ्लाइट लेकर 2.15 पर हम पोर्ट ब्लेअर हवाई अड्डे पर उतरे। टैक्सी पकड़कर सीधे गेस्ट हाऊस गये। और उस दिन आराम किया। 7 नवम्बर को सुबह हम पोर्ट ब्लेअर में स्थानीय दर्शन के लिए टैक्सी से निकल गये। सबसे पहले कुछ बीच देखें जो वास्तव में सुन्दर थे। उसके बाद टैक्सीवाला हमें मानव विकास संग्रहालय ले गया। जो कोई खास नही था। फिर जोगर्स पार्क गए जो खाली घूमने के मैदान के समान था।

राजीव गांधी समुद्री क्रीडा केन्द्र गऐ। जो कुछ विशेष उत्सवों पर ही सक्रीय होता है। कुछ और दूसरे छोटे–छोटे स्थानों का भ्रमण करने के बाद सैलूलर जेल पहुँचे जो वास्तव में अण्डमान यात्रा का मूल केन्द्र था। सैलूलर जेल में तीन बड़ी बड़ी, तीन मंजिला इमारते थी। उनमें कुल मिलाकर लगभग 1400 कोठरी थी। जिनमें कैदियों को रखा जाता था। उनमें बडे ही तकनीकी तरीके से भारी भरकम कुण्डियाँ लगाई हुई थी। जिन पर अन्दर से किसी कैदी का हाथ किसी भी तरह कुण्डी तक नही पहुँच सकता था। जेल के प्रांगण में कैदियों को सजा देने के लिए सजाघर थे। जहाँ पर उन्हे सरसों के कोल्हू से तैल निकालने तथा नारियल तोड़ने का काम दिया जाता था। जो कैदी अपना कार्य पूरा नही कर पाते थे। उन्हे कठोर दण्ड दिया जाता था। जिसमें उनकी पीठ पर किसी कैदी से ही इतने कोड़े लगवाऐं जाते थे। कि वो रात को सो नही पाता था। वहाँ एक फाँसी घर भी था। जिसमें रस्सी का फंदा गले में डालकर नीचे से तख्ता खींच दिया जाता था। ये एक ऐसा मन्दिर है जहाँ कम से कम हर चुनाव लड़ने की चाहत रखने वाले नेताओं को एक सप्ताह के लिए उन्ही हालात में रखना चाहिए। जिनमें हमारे महान स्वतन्त्रता सैनानी रहते थे।

अगर केजरीवाल जी, तेजस्वी व तेज प्रताप यादव जैसे लोग नेता बनेंगे जिन्होने देश के लिए कुछ किया ही नही, धोखा देकर या पाप की काली कमाई

से नेता बन गए जो इस आजादी का मूल्य जानते ही नहीं, वो देश की आजादी को कभी भी बेच सकते है।

बाथम द्वीप :– एक छोटा सा द्वीप है जिस पर अंग्रेजों ने एक आरा मशीन लकड़ियों को चीरने के लिए लगाई थी। जो अभी भी चालू है। बीच में इस पर जर्मनों का कब्जा रहा था। महान स्वतन्त्रता सेनानी सुभाष चन्द्र बोस के हस्तक्षेप पर जर्मनों ने इस द्वीप को खाली तो कर दिया था। परन्तु जाते जाते बम गिरा गये थे। जिससे इसका काफी नुकसान हुआ था ये हमारी 8 नवम्बर की यात्रा का पहला पड़ाव था।

रौस आईसलैण्ड :– इसके बाद हम रौस आईलैण्ड गऐ जहाँपर हिरणों व सफेद खरगोशों का झुण्ड निर्भय होकर सैलानियों के बीच घूम रहा था। ऊपर एक तालाब भी था। जहाँ कई सौ हिरण व बारहसिंगे आराम कर रहे थे। यहाँ नारियल व सुपारी के बहुत सारे पेड थे। नारियल पेड़ों से बडी तादाद में गिरे हुऐ थे। यहाँ नेवी का कब्जा है। आने वाले सैलानियों से नेवी वाले 10 रूपये प्रति सैलानी लेते है। बीच काफी साफ व सुन्दर है।

नोर्थ बे आईलैण्ड :– जैसा नाम से जाहिर है ये बे ऑफ बंगाल के उत्तर में है यहाँ सैलानियों को कई तरह की समुद्री एक्टीविटी कराई जाती है। जैसे 1800 रूपये में स्कूवा डाईविंग और 2500 रूपये में डालफिन डाइविंग कराया जाता है। स्कूवा डाईविंग में विशेष कपड़े व चश्में लगाकर ऑक्सीजन सिलैण्डर के साथ समुद्र में नीचे जाकर विभिन्न समुद्री जीव जन्तुओं का अध्ययन किया जाता है। डालफिन डाइविंग में एक डालफिन के आकार बोट में सैलानी बैठ जाते है। बोट ऊपर से बंद हो जाती है। और समुद्र की तलेहटी में चली जाती है। क्योकि चारों तरफ से पारदर्शी पदार्थ से बनी होती है। अतः यात्री समुद्री जीवन जन्तुओ का निरीक्षण कर सकता है।

बरतांग आइलैण्ड और चिडिया टापू :– 9 नवम्बर को हम सुबह 4 बजे बरतांग आइलैण्ड व चिडिया टापू के लिए बस से निकले। बस चार घण्टे लगाती है। और फिर दो घण्टे शिप से चलकर चिडिया टापू पहुँचते है। वहाँ पर अनेक प्रकार की रंग बिरंगी चिडियों को देखा जा सकता है जिन्हे आप ने शायद अपनी आंखों से कभी न देखा हो। बरतांग द्वीप पर केवल आदिवासी रहते है। जो नाम मात्र को ही काई कोई तन पत्तों आदि से ढकते है। यहाँ 2 कि. मी. पैदल चलने के बाद अद्भुत लाईम स्टोम गुफाओं को देखा जा सकता है। जो प्राकृति द्वारा निर्मित है।

हैवलोक और नील आइलैण्ड :– क्योकि 10 नवम्बर को हमारी फ्लाईट चेन्नई के लिए थी। इसलिए हम हैवलोक व नील आईलैण्ड नही जा पाऐं। इसका किराया 9 हजार रूपये है। और कम से कम चार दिन पहले बुकिंग कराना पडता है। एलीफेन्टा बीच, काला पत्थर, लक्ष्मण बीच, राधा बीच, भरतपुर बीच, हावडा ब्रिज और सीतापुर बीच आदि दर्शनीय स्थल है।

निकोबार द्वीप :– यहाँ नेवी का बेस है इस लिए यहाँ जाने के लिए विदेशी सैलानियों को पासपोर्ट व वीसा रखना अनिवार्य है। ज्यादातर लोग समय अभाव व होने वाली फारमैलिटी के कारण यहाँ नही जा पाते है। यहाँ प्रसिद्ध वाइपर जैल है। जिसे अंग्रेजों ने सैलूलर जेल से पहले स्वतन्त्रता सैनानियों को यातना देने के लिए बनाया था। जिसे प्रचलित भाषा में काला पानी बोलते थे। 10 नवम्बर 2016 को पोर्ट ब्लेयर से 12 बजे हवाई जहाज द्वारा हम चेन्नई पहुँचे। 11 नवम्बर को राजधानी एक्सप्रेस से चलकर 12 नवम्बर 2016 को अपने मूल स्थान दिल्ली पहुँच गए।

– रोहिताश सिंह

हम पंछी बन जाऐं

नील गगन में उडते पंछी, हम को भी उडना सिखला दों
अपने जैसा सुन्दर साथर, हमको भी रचना सिखला दों।
बैठ डाल पर करे गूफ्त गू, ना कोई चिन्ता ना डर हो।
मिल जुल कर सब रहे साथ, सुख दुख सबका साझा हो।
अपने जैसा हमे बना दो, हम कुदरत के साथ रहे।
खेले कूदें उडें गगन में, निश्छल और निश्पाप रहे।
नदियों का निर्मल जल पीकर, खेतों से दाना चुग आऐं।
मन करता है तुम्हे देखकर, हम भी पंछी बन उड़ जाऐं।

– धर्मवती देवी

सपनों का भारत

आज बताता हूँ, मेरे सपनों का भारत कैसा हो।
राम राज सा सुन्दर हो, और नवयुग का निर्माता हो।
कल कल बहती निर्मल नदियां, पक्षी राग सुनाते हो।
शुद्ध हवा के झोकें हो, और वन उपवन मुस्काते हों।
स्वस्थ समाज सुशिक्षित हो, और ज्ञान की गंगा बहती हो।
युवा देश के निर्माता हो, ऐसा युग निर्माण करें।
जन जीवन खुशहाल बने, भारत हो सतयुग जैसा
राम कृष्ण की भूमि हो, दुनिया में इसका वन्दन हो।

– धर्मवती देवी

मानवता

न खुदा न फरिश्ता, न भगवान हीं कही दिखता,
बेवजह इंसान से इंसान आपस में है भिड़ता।
खबरदार! जबतक राम या श्याम न आ जाए,
फिर न कोई मस्जिद उनके नाम पर तोड़ा जाए।
न यीशु का पता, न पता, है कहाँ खुदा,
कहां मिलेंगे प्रभु।
ये पंडितों जरा तुम्हीं दो ये बता।
जो मिला दे इनसे हमें,
समझों साथी गुलाम हो गया उसीका।
भटकता रहा जिन्दगी भर,
बनावटी बातों को मानकर,
थक कर बैठ गया, जिन्दगी से हार कर।
तेल का एक बूंद तक न मिला,
देख लिया बालू को पेड कर।
मानव का मानव से, है अटूट सा रिश्ता,
मानव का पहला धर्म है 'मानवता'।

–मिथिलेश कुमार साथी

आप सभी पंचायतवासियों को

गीतांजली गारमेन्ट्स

एवं गणेश कुमार सिंह उप मुखिया, चमरहरा पंचायत

की ओर से

लोहड़ी, मकर संक्रान्ति व गणतंत्र दिवस

की

हार्दिक शुभकामनायें

भारतीय स्टेट बैंक

ग्राहक सेवा केन्द्र

जंगी चौक, गोरीगांमा हाट, महनार रोड़, वैशाली

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें, धर्मेन्द्र कुमार साह - PH. 7563087961

M. 7250144545

रमेश कुमार प्लम्बरिंग

सैनेट्री के लिए या मेनटेनंस के लिए सम्पर्क करें।

प्रो. पंकज कुमार M. 7549278902, 8651727528

आदर्श इलैक्ट्रीकल वर्क्स

सभी तरह की वायरिंग, रिपेयरिंग एवं मेन्टेनंस के लिए सम्पर्क करें।

साथी और आपका फैसला (साफ) पार्टी	
पार्टी का अकाउन्ट विवरण निम्न है :- बैंक का नाम :- सैन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया पार्टी का नाम :- साथी और आपका फैसला पार्टी A/C No. : 3945366970 IFSC Code :- CBIN0280017 MICR Code :- 844016285	पार्टी के नाम चन्दा के रूप डी.डी., ड्राफ्ट चैक तथा पे ऑर्डर भेजने के लिए कार्यालय का पता : E-71, Gali No.15, Shiv Ram Park Nangloi, New Delhi-110041

निवेदक-मिथिलेश कुमार साथी (राष्ट्रीय संयोजक)
साथी और आपका फैसला पार्टी

आपको एवं सभी वार्ड सदस्यों को

लोहड़ी, मकर संक्रान्ति व गणतंत्र दिवस

की हार्दिक शुभकामनायें

क्रान्ति कुमार

अध्यक्ष, प्रखण्ड वार्ड सदस्य संघ महनार, वैशाली

आप सभी को

लोहड़ी, मकर संक्रान्ति व गणतंत्र दिवस

की

हार्दिक शुभकामनाओं

के साथ साथ नया साल मुबारक हो।

अनीश कुमार सिंह

पंचायत अध्यक्ष, साफ पार्टी

आप सभी को

लोहड़ी, मकर संक्रान्ति व गणतंत्र दिवस

की

हार्दिक शुभकामनाओं

के साथ साथ नया साल मुबारक हो।

नंद किशोर झा

राष्ट्रीय उप सचिव, साफ पार्टी

2017 का क्रिकेट कैलेंडर

जनवरी	इंग्लैंड का भारत दौरा	3 वनडे और 3 टी20
फरवरी	बांग्लोदश का भारत दौरा	1 टेस्ट
फरवरी–मार्च	ऑस्ट्रेलिया का भारत दौरा	4 टेस्ट
अप्रैल–मई	आईपीएल 10	
जून	ICC चैम्पियंस ट्रॉफी, इंग्लैंड	
जुलाई	भारत का वेस्टइंडीज दौरा	5 वनडे, 1 टी20
सितम्बर	भारत का श्रीलंका दौरा	3 टेस्ट, 5 वनडे, 1 टी20
अक्टूबर	ऑस्ट्रेलिया का भारत दौरा	5 वनडे, 2 टी20
नवम्बर	भारत का द. अफ्रीका दौरा	4 टेस्ट, 5 वनडे, 2 टी20

साथी और आपका फैसला (साफ) पार्टी

की तरफ से शुभकामनाओं का गुलदस्ता

कैलेण्डर – 2017

JANUARY

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

FEBRUARY

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28				

MARCH

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

APRIL

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

MAY

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

JUNE

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

JULY

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

AUGUST

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

SEPTEMBER

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

OCTOBER

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

NOVEMBER

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

DECEMBER

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

List of Holidays

1 Jan	New Year's Day
5 Jan	Guru Govind Singh Jayanti
14 Jan	Pongal
14 Jan	Makar Sankranti
26 Jan	Republic Day
1 Feb	Vasant Pachami
10 Feb	Guru Ravidas Jayanti
19 Feb	Shivaji Jayanti
21 Feb	Maharishi Dayanand Saraswati Jayanti
24 Feb	Maha Shivaratri
12 Mar	Holika Dahana
13 Mar	Dolyatra
28 Mar	Chaitra Sukhladi
4 Apr	Rama Navami
9 Apr	Mahavir Jayanti
11 Apr	Hazarat Ali's Birthday
13 Apr	Vaisakhi
14 Apr	Good Friday
14 Apr	Ambedkar Jayanti
15 Apr	Mesadi/Vaisakhi
16 Apr	Easter Day
10 May	Buddha Purnima/ Vesak
23 Jun	Jamat-Ul-Vida
25 Jun	Rath Yatra
26 Jun	Ramzan Id/Ed-ul-Fitar
7 Aug	Raksha Bandhan (Rakhi)
15 Aug	Independence Day
15 Aug	Janmasthami
25 Aug	Ganesh Chaturthi/Vinayaka Chaturthi
2 Sep	Bakr Id/Ed ul- Zuha
4 Sep	Onam
27 Sep	Maha Saptami
29 Sep	Maha Navami
30 Sep	Dussehra (Maha Navami)
1 Oct	Muharram/Ashura
2 Oct	Mahatma Gandhi Jayanti
5 Oct	Maharishi Valmiki Jayanti
8 Oct	Karaka Chaturthi (Karva Chauth)
18 Oct	Naraka Chaturdasi
19 Oct	Diwali
20 Oct	Goverdhan Pooja
21 Oct	Bhai Duj
26 Oct	Chhat Puja
4 Nov	Guru Nanak Jayanti
24 Nov	Guru Teg Bahadur's Martyrdom Day
2 Dec	Milad un-Nabi/Id-e- Milad
24 Dec	Christmas Eve
25 Dec	Christmas